नवम्बर 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

परम पूज्य 109 वाँ
दादा भगवान का
जन्मजयंती महोत्सव

9 से 15 नवम्बर, 2016 | चलसाड

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 133
नवम्बर 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

एकावतारी मोक्ष का पुरुषार्थ

संपादकीय

हर किसी को मोक्ष की इच्छा रहती है, लेकिन अगर मोक्ष मार्ग ही न मिले तो उस रास्ते पर प्रयाण कैसे करेगा? इस काल में इस क्षेत्र से मोक्ष नहीं है, शास्त्र की ऐसी बातों से सहमत होकर लोग उलझन में पड़ जाते हैं। भगवान ने कहा है कि, 'यहाँ दुषमकाल में फिलहाल मन-वचन-काया की एकता नहीं है, इसलिए इस काल में इस क्षेत्र से मोक्ष नहीं है।' लेकिन इसका अर्थ ऐसा नहीं है कि मोक्ष मार्ग बंद है। मोक्ष मार्ग खुला ही है लेकिन वाया महाविदेह क्षेत्र। इस काल में अक्रम मार्ग द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करके एकावतारी मोक्ष पद ज़रूर प्राप्त कर सकते हैं। लाख रुपए का चेक भले ही न मिले लेकिन अगर 99,999 का चेक मिल रहा है तो वह क्या कम मूल्यवान है?

इस काल की कैसी बलिहारी कि दुषमकाल में अक्रम ज्ञानी और उनके द्वारा अक्रम विज्ञान प्रकट हुआ और उस अक्रम विज्ञान द्वारा सिर्फ दो ही घंटे में क्षायक समकित प्राप्त हो जाता है। वास्तव में तो यह ज्ञान केवलज्ञान ही है, लेकिन इस काल में केवलज्ञान प्रकट नहीं हो सकता, अत: वह केवलदर्शन में परिणमित हो जाता है जिससे फिर आत्मज्ञान प्राप्त करके व्यक्ति एकावतारी बन जाता है।

आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद एकावतारी मोक्ष की प्राप्ति के लिए सिर्फ दादा भगवान परम पूज्य दादाश्री द्वारा दी गई पाँच आज्ञाओं का पालन करना है। ज्ञान मिलने के बाद कर्ताभाव तो चला गया अत: कर्म चार्ज होने बंद हो गए, लेकिन जो निकाली कर्म बाकी बचे हैं, उनका क्या? और वे डिस्चाज कर्म आज्ञापालन किए बिना खत्म नहीं हो सकते। ध्येय की पूर्णाहुति के लिए आज्ञापालन का पुरुषार्थ ही मुख्य है।

आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद एकावतारी मोक्ष प्राप्त करने के लिए अब इस जन्म में स्पष्टवेदन की प्राप्ति ही अपना ध्येय है, लेकिन वह पद प्राप्त करने में अब्रह्मचर्य-विषय एक बड़ा भयस्थान है। यों तो विषय व कषाय दोनों से मुक्त होना है लेकिन अब्रह्मचर्य रूपी विषय के सामने बहुत ही जागृति रखने की ज़रूरत है।

अब ज्यों-ज्यों फाइलों का समभाव से *निकाल* होता जाएगा, त्यों-त्यों व्यवहार गुणस्थानक में प्रगति होती जाएगी। संपूर्ण *निकाल* हो जाएगा यानी काम पूर्ण हो जाएगा। जिसका *निकाल* करने का दृढ निश्चय है, उसे बिल्कुल भी देर नहीं लगेगी, एक-दो जन्मों में निबेड़ा आ जाएगा।

प्रस्तुत संकलन में एकावतारी मोक्षदाता ज्ञानीपुरुष की स्थिति और एकावतारी मोक्ष कैसे प्राप्त कर सकते हैं उसका अभूतपूर्व वर्णन समाया हुआ है। तो चलिए हम सभी उसका अभ्यास करके, एकावतारी मोक्ष की प्राप्ति के लिए सिन्सियरली पुरुषार्थ शुरू करके अपना काम *निकाल* लें।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

एकावतारी मोक्ष का पुरुषार्थ

मोक्षमार्ग खुला ही है

प्रश्नकर्ता : शास्त्र में बताते हैं कि (इस भूमि से) मोक्षमार्ग बंद है।

दादाश्री : कुछ अवधि तक मोक्षमार्ग बंद है, उसका अर्थ यह नहीं है कि एकावतारी नहीं हुआ जा सकता। यहाँ भरतक्षेत्र में एकावतारीपन हो सकता है। यहाँ से मोक्षमार्ग बंद हो गया है लेकिन पूरा रास्ता बंद नहीं हुआ है।भगवान ने कहा कि अब यह पूरा काल अवसर्पिणी, दुषमकाल आ रहा है। इसलिए जो लाख रुपए का चेक था, वह पूरा चेक नहीं दिया जाता। सिर्फ 99,999 और 99 पैसे दिए जाते हैं। बस इतना ही कम हुआ है, ज़्यादा नहीं, पर लोगों ने ऐसा समझ लिया कि पूरा बंद हो गया। नहीं, सिर्फ एक पैसा ही कम हुआ है।

प्रश्नकर्ता : महावीर स्वामी ने लिखा है कि मोक्ष के द्वार बंद हो गए हैं, तो मोक्ष कहाँ से मिलेगा?

दादाश्री : 'मोक्ष के द्वार बंद हो गए हैं,' हमें इस बात का भावार्थ समझना चाहिए। भगवान ने क्या कहा है कि, 'चौथे आरे में यहाँ से डायरेक्ट मोक्ष होता था।' यहाँ से सीधा मोक्ष में चला जाता था। इस पाँचवे आरे में एकावतारी होता है। सिर्फ एक जन्म बाकी रहता है। क्या वह मोक्ष नहीं कहलाएगा? इन सभी का हो गया है (महात्माओं का)! मैंने कहा है कि, 'चिंता हो तो मुझ पर दावा करना।' वह भी 100-200 को नहीं, (1978 तक) 5,000 लोगों को ज्ञान दिया है। और अभी तो मुझे पूरी दुनिया को सीधा करना है।

मोक्षमार्ग 'क्रमिक-अक्रम'

मोक्षप्राप्ति के दो मार्ग हैं: प्रथम 'क्रमिक मार्ग'। उसमें क्रमपूर्वक त्याग करते-करते आगे बढ़ना है, सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर चढ़ना है। दूसरा है 'अक्रम मार्ग' 'जो आज यहाँ 'हम में' प्रकट हुआ है। 'यह' 10 लाख सालों में प्रकट होता है, जो वर्ल्ड (दुनिया) का आश्चर्य है! लिफ्ट में बैठकर मोक्ष में जा सकते हैं। इसमें ग्रहण या त्याग कुछ भी नहीं है। यह बिना मेहनत का मोक्षमार्ग है, लिफ्ट मार्ग है। जो महापुण्यशाली हों, उनके लिए 'यह' मार्ग है। वहाँ पर तो ज्ञानी मुहर लगाएँ और मोक्ष हो जाता है। 'यह' तो नक़द मार्ग है, उधार कुछ भी नहीं रखते। नक़द होना चाहिए। 'यह' वैसा ही नक़द मार्ग प्रकट हुआ है। दिस इज़ द ऑन्ली केश बैंक इन द वर्ल्ड। (इस दुनिया में सिर्फ यही एक नक़द बैंक है।)

क्षायक समकित अक्रम विज्ञान से

प्रश्नकर्ता : इस काल में क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त हो सकता है क्या? मैंने ऐसा पढ़ा है कि पूर्वजन्म से क्षायक समकित लेकर आया हुआ जीव वर्तमान काल में भरतक्षेत्र में जन्म ले सकता है, लेकिन अभी यहाँ पर नया क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता!

दादाश्री : वह ठीक है। शास्त्रकारों ने जो कहा है, उसमें कुछ गलत नहीं है। वह क्रमिक मार्ग के लिए कहा है। लेकिन यह अक्रम विज्ञान है। यह अक्रम विज्ञान क्या है? अपवाद है यह। शास्त्रों में अपवाद नहीं होते। शास्त्र नियम के अधीन हैं जबकि यह अपवाद मार्ग है, अत: शास्त्र से बाहर है। मोक्षमार्ग का, ज्ञान वही है। लेकिन अपवाद है, इसलिए अक्रम विज्ञान है।

और यहाँ क्षायक समकित का अनुभव होता है। क्षायक समकित अर्थात् केवलदर्शन, क्षयोपक्षम दर्शन नहीं बल्कि केवलदर्शन।

वास्तव में यह क्षायक सम्यक्त्व नहीं है, यह तो केवलज्ञान है लेकिन केवल पचता नहीं है, इस काल की वजह से! अगर पच जाए तो मोक्ष हो जाए! यह क्षायक सम्यक्त्व, केवलज्ञान कहलाता है। यह तो अक्रम विज्ञान है। क्रमिक की वह बात सही है, गलत नहीं है कि (इस काल में) क्षायक सम्यक्त्व नहीं है। उसमें (क्षायक सम्यक्त्व में) समकित होने के बाद 15 जन्मों में मोक्ष हो जाता है। (तो) एकावतारी कैसे बन सकता है? यह अक्रम विज्ञान प्राप्त हो जाए तो यह एकावतारी पद है।

समकित हो जाने पर परिणाम क्या?

प्रश्नकर्ता : समकित हो जाने के बाद क्या मनुष्यगति बंद हो जाती है?

दादाश्री : हाँ। क्रमिक मार्ग (मनुष्यगति) आती है, लेकिन ऐसा है कि अक्रम मार्ग की वजह से इस काल में नहीं आ सकती। इस काल का समकित अलग प्रकार का है।

प्रश्नकर्ता : क्या हर काल के समकित में अंतर होता है?

दादाश्री : जिसे (क्रमिक मार्ग में) उपशम समकित हो जाए उसे दोबारा मनुष्य जन्म मिलता है। लेकिन (अक्रममार्ग में) यह क्षायक समकित है इसलिए फिर से मनुष्य जन्म नहीं मिलता।

समकित हो जाने के बाद तिर्यंच और नर्कगति बंद हो जाती हैं, और लगभग मनुष्यगति भी बंद हो जाती है। और यह अक्रम मार्ग वाला समकित तो मोक्षफल देता है, एकावतारी ही है यह।

'अक्रम मार्ग' में 'ज्ञानीपुरुष' क्षायक समकित का तंत डाल देते हैं, इसलिए उन कषायों का तंत नहीं रहता। 'यह' (समकित का) तंत हो तो वह (कषायों का) नहीं रहता और वह तंत हो तो 'यह' नहीं रहता!

दु:ख का अभाव वह 'पहला' मोक्ष

यहाँ पर महात्माओं को केवलदर्शन प्राप्त हुआ है। उसमें कौन-कौन से अनुभव बरतते हैं? क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, क्षायक समकित हो जाने के बाद वे बीज के रूप में नहीं रहते। जीवंत रूप में नहीं रहते। वे निर्जिव भाव में हैं और जिन्हें संपूर्ण अजीव भाव में है, ऐसा कहा जाता है, जो-जो *पुद्गल* (जो पूरन और गलन होता है) (परमाणु) बन चुके हैं, वे उतने ही अपनी जगह पर रहते हैं। उससे क्रोध-मान-माया-लोभ व चिंता नहीं होते। संसार में रहने के बावजूद भी चिंता नहीं होती।

अगर एक दिन भी चिंता रहित बीते तो लोग अपने आप को कितना धन्य मानते हैं! आपको भी शांति लगती है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ। बिल्कुल शांति।

दादाश्री : शांति! कोई तकलीफ नहीं। सिद्ध भगवंत का (निराकुलता) नामक एक गुण उनमें प्रकट हो जाता है।

यहाँ पर कोई दु:ख ही न रहे उसे पहला मोक्ष कहते हैं। संसारी दु:खों का अभाव, वह पहला

मोक्ष है। बाद में स्वभाविक सुख का सद्भाव आता है, वह दूसरा मोक्ष।

दु:ख का अभाव यानी अभी अगर कोई गालियाँ दे, तो भी दु:ख न हो, कोई मारे तो भी दु:ख न हो, दाल ज़्यादा खारी, कढ़ी ज़्यादा खारी हो तो भी दु:ख न हो।

प्रश्नकर्ता : वह पहला मोक्ष!

दादाश्री : वह पहला मोक्ष, संसारी दु:ख का असर न हो, वह पहला मोक्ष।

देह से मुक्ति, वह आत्यंतिक मोक्ष

और फिर जब यह देह छूट जाए तब आत्यंतिक मोक्ष, एक-दो जन्मों के बाद! अभी संसारिक दु:ख का अभाव रहता है। यदि मेरे कहे अनुसार रहेंगे तो सांसांरिक दु:ख आपको स्पर्श नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : 'देह का मोक्ष' ऐसा जो लिखा है, वह क्या है?

दादाश्री : इस जन्म में इस देह का निर्वाण नहीं होगा। एक और जन्म लेना पड़ेगा, फिर शरीर का भी मोक्ष हो जाएगा। आत्मा का मोक्ष और शरीर का मोक्ष। दोनों बंधे हुए थे न, दोनों छूट जाते हैं! सब अपने-अपने रास्ते घर पर!

सर्व काल में सर्व क्षेत्र से मोक्ष, भगवान द्वारा

प्रश्नकर्ता : एक पद में ऐसा आया कि, 'सर्व काले, सर्व क्षेत्रे मोक्ष मलशे अम थकी' (सर्व काल में सर्व क्षेत्र में मोक्ष मिलेगा हमारे द्वारा) तो सर्व काल और सर्व क्षेत्र..' का क्या अर्थ है?

दादाश्री : हर एक क्षेत्र से (मोक्ष) है और ये जो भगवान अंदर बैठे हैं न, उनके द्वारा ही है। भगवान के बिना किसी भी काल में मोक्ष हो सकता है क्या? क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : यानी ऐसा कहना चाहते हैं। आपने तो पहचान लिया न भगवान को? 'ये' (जो दिखाई देते हैं,) ये भगवान नहीं है, ऐसा मैंने आपको समझाया था न? 'ये' पटेल हैं। अंदर जो बैठे हैं, वे भगवान हैं और उनके द्वारा मोक्ष है। ऐसा अब आपकी समझ में आता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : वह समझ में आ गया।

दादाश्री : फिर 'सर्व काले और सर्व क्षेत्रे' अर्थात् पहले जब-जब यहाँ से वह (मोक्ष) हुआ था, वह भगवान द्वारा ही हुआ था।

अक्रम विज्ञान के प्रताप से मुक्ति सरल

एक व्यक्ति ने मुझ से पूछा कि 'यह अक्रम विज्ञान क्या है और संसार में यह क्या कार्य करता है?' मैंने कहा, 'कई लोग मोक्ष में जाने के लिए, इस संसाररूपी वृक्ष से पत्ते ही तोड़ते रहते हैं।' इसलिए ऐसा नहीं लगता कि पेड़ का नाश हो गया है। वापस पत्ते फूट निकलते हैं। कई लोग छोटी-छोटी डालियाँ तोड़ते रहते हैं। और ऐसा मानते हैं कि नाश हो जाएगा लेकिन उससे कुछ नहीं होता। कई लोग बड़ी-बड़ी शाखाएँ काट देते हैं लेकिन उससे संसारवृक्ष का नाश नहीं हो जाता। वह उगता रहता है। कई लोग उसे तने से काट देते हैं, फिर भी कहते हैं कि 'उगता जा रहा है'। फिर मुझ से कहते हैं कि 'आप क्या करते हैं?' मैंने कहा, 'मैं तो, उसकी जो मुख्य जड़ है, उसका एक हिस्सा निकालकर अंदर दवाई भर देता हूँ, बस और कुछ नहीं। उसकी मुख्य जड़ खोजकर उसमें दवाई भर देता हूँ जिससे वह सूख जाता है।' तभी तो मोक्ष हो जाता है, वर्ना मोक्ष होता होगा कहीं? मनुष्य एकावतारी कैसे बनेगा?

आज के इस दुषमकाल के जीव, इस कलियुग के जीव, वापस मनुष्य बनने की काबिलियत नहीं

रखते। उस डिग्री तक पहुँचे हुए जीवों को मुक्ति प्राप्त होना, वह तो धन्य है इस अक्रम विज्ञान को कि यह अक्रम विज्ञान प्रकट हुआ! तमाम प्रकार की कमज़ोरियोंवाले जीव, कमज़ोरी में कोई कमी ही नहीं। उन्हें भी यह प्राप्त हो जाता है, वह अक्रम विज्ञान का प्रताप है न!

अक्रम विज्ञान - द ओन्ली केश बैंक

यह सब से अंतिम मोक्षमार्ग निकला है। ऐसे ज़माने में ऐसा मोक्षमार्ग निकला। एकावतारी मार्ग निकला। शास्त्रकारों ने लिखा है कि 'साड़े बारह हज़ार एकावतारी होंगे।' ऐसा कुछ यह निकला है! उसमें आपका कल्याण हो जाएगा और वह एकावतारी बनेगा या नहीं वह बाद की बात है लेकिन यहाँ तो हमें नक़द मोक्ष मिल जाना चाहिए। उधार किस काम का?

यहीं पर अगर मोक्ष न हो तो किस काम का? वर्ना इस कलियुग में तो सब लोग ठग लेते हैं। जान-पहचानवाले को अगर सब्ज़ी लेने भेजा हो तो उसमें से भी 'कमिशन' निकाल लेता है। कलियुग में क्या भरोसा? इसलिए 'गारन्टेड' होना चाहिए। हम यह 'गारन्टेड' देते हैं। फिर हमारी आज्ञा का जितना पालन करेगा, उतना ही उसे लाभ होगा।

एक ही जन्म बाकी रहे, ऐसा है यह। इस विज्ञान की पद्धति बहुत लंबी नहीं है। आसान है, सहज है, सरल है, सुगम है। क्या यह आसान नहीं है?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल आसान है, इसके जैसा आसान अन्य कोई मार्ग है ही नहीं।

दादाश्री : अन्य कोई भी मार्ग इतना आसान नहीं है। इतना सरल है।

'ज्ञानवर्षा' हुई इस दुषमकाल में

'सकळ ब्रह्मांड झंखे ते ज्ञान वर्षा ने असह्य उनाळे।'

पूरा ब्रह्मांड जिस 'ज्ञान' की बरसात की इच्छा करता है उस 'ज्ञान' की बरसात हुई तो हुई, लेकिन वह भयंकर ग्रीष्म काल में हुई! भयंकर दुषमकाल में 'ज्ञानवर्षा' हुई। जहाँ मनुष्य मात्र सब तड़फड़ाते हैं, ऐसे काल में! चौमासे में बरसात होना तो नियमानुसार कहलाता है। लेकिन यह तो दुषमकाल की गर्मी में जो नहीं होना था, वह हो गया है, नहीं होनेवाली बरसात हो गई है! तो वहाँ काम निकाल लेना है।

आत्मा का *लक्ष* बैठता है घंटे भर में ही

मोक्ष का मार्ग तो खिचड़ी बनाने से भी आसान है। अगर कठिन हो, कष्ट साध्य हो तो वह मोक्ष का मार्ग नहीं, अन्य मार्ग है। 'ज्ञानीपुरुष' मिले तो ही मोक्ष का मार्ग आसान और सरल हो जाता है। खिचड़ी बनाने से भी आसान हो जाता है। करोड़ों योजन लंबा, करोड़ों जन्मों में भी प्राप्त नहीं हो, ऐसा मोक्षमार्ग एकदम शोर्टकट रूप में प्रकट हुआ है! यह 'ज्ञान' तो, उन्हीं वीतरागों का है, सर्वज्ञों का है। मात्र तरीका ही 'अक्रम' है। दृष्टि ही पूरी बदल जाती है। घंटे भर में ही आत्मा का *लक्ष* बैठ जाता है। नहीं तो क्रमिक मार्ग में कोई ठेठ तक *लक्ष* प्राप्त नहीं कर सकता है। आत्मा का *लक्ष* प्राप्त करने के लिए लोगों ने कैसे-कैसे पुरुषार्थ किए हैं! एक क्षण के लिए भी आत्मा का *लक्ष* प्राप्त हो जाए, उसके लिए लोगों ने भयंकर तप किए थे! 'क्रमिक मार्ग' के ज्ञानियों को अंत तक 'शुद्धात्मा' का *लक्ष* नहीं बैठता, लेकिन जागृति बहुत रहती है। जबकि आप सब को अभी यहाँ पर कितना सरल हो गया है कि आपको घंटे भर में आत्मा दिया, उसके बाद कभी भी *लक्ष* चूकते नहीं हैं और आत्मा निरंतर *लक्ष* में ही रहता है।

_लक्ष_ रहता है निरंतर स्वरूप का (शुद्धात्मा का)

'रात को दो बजे नींद में से उठते हो, तब आपको सब से पहले कौन सी चीज़ याद आती है?'

प्रश्नकर्ता : 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' यही याद आता है।

दादाश्री : लोगों को तो इस जगत् की कोई भी सब से प्रिय चीज़ हो, वही पहले याद आती है लेकिन आपको तो 'शुद्धात्मा' ही पहले याद आता है। अलख का कभी भी _लक्ष_ नहीं बैठता है। इसीलिए ही तो आत्मा को 'अलख निरंजन' कहा है! लेकिन यहाँ एक घंटे में आपको _लक्ष_ बैठ जाता है! यह 'अक्रम-ज्ञानी' की सिद्धियाँ-रिद्धियाँ, देवी-देवताओं की कृपा, उन सब के कारण एक घंटे में ग़ज़ब का पद आपको प्राप्त हो जाता है!

करोड़ों जन्म कम करके एकावतारी बनाए, ऐसा है यह विज्ञान। वर्ना, करोड़ों जन्मों में भी ठिकाना नहीं पड़े। मोक्ष का मार्ग इस तरह का होता ही नहीं है। ऐसा कभी भी, किसी ने नहीं कहा है, इसलिए तो जब लोग ऐसा पढ़ते हैं तब कहते हैं कि 'ऐसा कैसे हो सकता है?' ऐसे करते-करते पूरी ज़िंदगी बीत जाएगी!

खरा मोक्षमार्ग प्रकट हुआ है लेकिन अगर समझ में आए तो काम हो जाए, और समझ में नहीं आया तो भटक मरेगा!

आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप

हम 'ज्ञान' देते हैं, उसके बाद आपको आत्मानुभव हो जाता है, फिर क्या काम बाकी बचा? 'ज्ञानीपुरुष' की आज्ञा पालनी है। आज्ञा वही धर्म और आज्ञा वही तप। और 'हमारी' आज्ञा संसार में बिल्कुल भी बाधक नहीं होती। संसार में रहने के बावजूद भी संसार स्पर्श नहीं करे, ऐसा यह अक्रम विज्ञान है।

'हमारा' दिया हुआ ज्ञान और अगर हमारे कहे अनुसार चलेगा तो एक ही जन्म में उसका मोक्ष हो जाएगा। और यहीं से मोक्ष हो जाएगा, वर्ना करोड़ों जन्मों तक भी हो पाए, ऐसा नहीं है। अत: वस्तुस्थिति में हमारी पाँच आज्ञाओं का स्वीकार कर लो।

ये पाँच आज्ञाएँ अगले जन्म प्राप्ति के मार्ग में प्रतिबंध हैं। इसलिए आज्ञा में रहने का विचार रखना (सोचना)। आज्ञापालन करोगे तो सभी जगह निरंतर समाधि रहेगी और संसार अच्छी तरह से चलेगा। जिसका ऐसा निश्चय होगा कि, हमारी आज्ञा का पालन करना है उसकी एक-दो जन्मों में मुक्ति हो जाएगी।

क्या होता है देखते रहो

पाँच आज्ञाएँ किसलिए हैं? इस ज्ञान के रक्षण के लिए हैं। हमने जो भेद डाल दिया है, वह फिर से एकाकार न हो जाए, इसलिए हैं। इन दोनों को अलग किया है न, उसमें बीच में भेद रेखा, लाइन ओफ डिमार्केशन पड़ गई है। अब अगर हमारी आज्ञा का पालन करोगे तो एकाकार नहीं होंगे। पूरा आत्मा समझ में आ गया। 'व्यवस्थित' चंदूभाई से जो कहेगा उस अनुसार वे करते रहेंगे, आपको यह देखते रहना है, कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं। एक जन्म में चाहे कुछ भी हो लेकिन आप अगर देखते ही रहेंगे और आज्ञा में रहेंगे तो एक जन्म बाद मोक्ष में जा सकेंगे ऐसा है यह ज्ञान।

ये कसाई होते हैं न! यदि मैं उन्हें ज्ञान दूँ और अगर वे ज्ञान में रहें और जो हो रहा है उसे देखते रहें, किसी में दखल नहीं करें तो वे मोक्ष में जाएँगे। कसाई की क्रिया आड़े नहीं आती, 'मैं कर रहा हूँ,' वह आड़े आता है। (ज्ञान मिलने के बाद) कुछ भी नहीं करना है। जो हो रहा है उसे देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : हमें जो भाव होते हैं वे!

दादाश्री : भाव किया, निश्चय हुआ, फिर देखते रहना है कि निश्चय के अनुसार क्या हुआ। यह तो पूर्वजन्म की जो डिज़ाइन है, वही डिज़ाइन निकल रही है।

प्रश्नकर्ता : वह जो निकल रही है, वह तो डिस्चार्ज ही हुआ न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन हमें कुछ करना नहीं होता न!

आज्ञापूर्वक का, वह एकावतारी भाव

आप अब कुछ करते नहीं हैं न? कुछ भी नहीं? अच्छा है! सिर्फ दादा की आज्ञा?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह तो एकावतारी विज्ञान है! मेरी आज्ञा का अगर संपूर्ण पालन करेगा, तो उसका एक जन्म में संपूर्ण खत्म (समाप्त) हो जाएगा। वर्ना शायद दो या तीन जन्म हो सकते हैं। चौथा जन्म नहीं होगा। आपको तो वैसा ही करना है न? *निकाल* ला देना है कि यही धंधा करना है, जन्मोजन्म? नहीं? आपको ऐसा लगता है कि निबेड़ा आ जाएगा? यह विज्ञान है। यह धर्म नहीं है। धर्म में करना पड़ता है, आपको तो और कुछ करना ही नहीं है। हमारी आज्ञा का पालन करना है।

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान ऐसा है कि और कुछ भी नहीं करना है, तो फिर यह जो विधि करते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : विधि वगैरह करना, वह सब? वह तो सिर्फ आज्ञापूर्वक करना है। और कुछ नहीं करना है। आज्ञापूर्वक अर्थात् एकावतारी भाव कहलाता है। आज्ञापूर्वक यानी अहंकार के अधीन नहीं करना है। पहले खुद का अहंकार जो कहे वह करते थे, अब आज्ञा के अधीन करना है, इसलिए ज़िम्मेदारी हमारी है।

ज्ञानी के कहे अनुसार चलो

यह रोड क्लियर (साफ) दिखाई दे रही है या नहीं दिखाई दे रही? क्लियर नहीं दिख रही हो तो मुझ से कहना कि किसी जगह पर बड़ा पहाड़ दिखाई दे रहा है, मुझ से कहेंगे तो मैं निकाल दूँगा तुरंत।

प्रश्नकर्ता : इसीलिए तो आए हैं।

दादाश्री : हाँ, हाँ। हमारे कहे अनुसार जो चलेगा न, उसका एक ही जन्म में मोक्ष है। और कोई अगर थोड़ी सी लापरवाही करेगा तो उसके दो, उससे ज़्यादा लापरवाही करेगा तो तीन। तीन से ज़्यादा नहीं होंगे लेकिन हमारे कहे अनुसार चलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने जो आज्ञाएँ दी हैं, उस अनुसार ठीक से पालन हो रहा है।

दादाश्री : फिर और क्या चाहिए? आज्ञा का पालन हुआ तो उसमें सब आ गया। कुछ भी करने का नहीं रहा! फिर भी अगर बुद्धि अंदर शोर मचाए न, उछलकूद करे तो उसे थोड़ा संतोष देना पड़ेगा।

प्रोटेक्शन के लिए पाँच आज्ञा

प्रश्नकर्ता : तो दादा, जो आपने पाँच आज्ञाएँ पालन करने को कहा है, वह अहंकार तो है ही न? अहंकार से ही पालन करना है न?

दादाश्री : वह तो ठीक है। अहंकार का सवाल नहीं है, उससे तो पुण्यकर्म बंधता है। इसीलिए हम कहते हैं न कि (एक-दो) जन्म हैं। वर्ना हमारी आज्ञा का पालन करने का रहता ही नहीं, अगर अंतिम जन्म होता तो! ज्ञान में ही बरत रहा होता, लेकिन यह काल ही ऐसा है, छोड़ेगा

ही नहीं न! यह काल ही विचित्र है। पूर्ण रूप से नहीं छोड़ता, ज़्यादा से ज़्यादा एकावतारी बनाता है।

यह काल ऐसा है कि रसोईघर से लेकर ऑफिस में, घर में, रास्ते में, बाहर ट्रेन में यों हर जगह कुसंग ही है। दो घंटे में मैंने आपको यह जो ज्ञान दिया है उसे कुसंग खा न जाए इसलिए पाँच आज्ञाओं के प्रोटेक्शन की बाड़ दी है कि यह प्रोटेक्शन करते रहोगे तो अंदर की दशा में ज़रा सा भी बदलाव नहीं होगा। ज्ञान, उसे दी गई स्थिति में ही रहेगा। इसलिए आपको ये आज्ञाएँ पालन करने को दी हैं। उतना भाग (हिस्सा) आपके पास रखा है।

यह दुषमकाल है इसलिए, पाँच वाक्य देते हैं, आज्ञाएँ देते हैं, वर्ना पाँच आज्ञाओं की भी ज़रूरत नहीं है। मैंने आपको यह जो ज्ञान दिया है न, तो सीधा उसी जन्म में मोक्ष! यह अक्रम ज्ञान ऐसा है कि तुरंत ही मोक्ष फल देता है। उसके बजाय (इस काल की वजह से) एकावतारी हो गया।

प्रश्नकर्ता : प्रमाण, प्रमाण, प्रमाण।

दादाश्री : इसलिए पाँच वाक्यों का आराधन करना पड़ता है। (काल की वजह से) एकावतारी है नहीं तो तुरंत ही तीन घंटे में मोक्ष हो जाता, अगर मर गया होता तो! हाँ, देह छूट गई तो मोक्ष हो जाएगा लेकिन ऐसा किसे? चौथे आरे के लोगों के लिए। पाँचवे आरे के लोगों के लिए तो ये पाँच वाक्य दिए हैं। इनमें रहेगा तो समाधि में रहेगा, और फिर ठेठ तक पहुँच जाएगा। चौथे आरे के लोगों (जैसा) बनना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : चौथे आरे में जाना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, वहीं जाना है। जहाँ चौथा आरा है वहीं जाना है। द्रव्य, गुण और पर्याय चौथे आरे के होने चाहिए। *पुद्गल* (जो पूरन और गलन होता है) पर्याय।

हमारी आज्ञा में रहोगे न तो एक ही जन्म में केवलज्ञान हो जाएगा। इस भूमिका की वजह से केवलज्ञान रुका हुआ है।

दिया है केवलज्ञान लेकिन पचा नहीं

प्रश्नकर्ता : दादा आप जो देते हैं उसे केवलज्ञान नहीं कहा जाएगा?

दादाश्री : मैं तो केवलज्ञान ही देता हूँ लेकिन पचता नहीं है। खुद मुझे भी काल की वजह से नहीं पचा और आपको भी नहीं पचता।

यह तो अगर पच जाए न, तो एक जन्म में ही मोक्ष में चला जाए। यह पच जाए ऐसा है फिर। इस जन्म में थोड़ा सा नहीं पचेगा, जितना बाकी रहता है, वह एक और जन्म जितना बाकी रहेगा। इसलिए यह मोक्ष में जाने का रास्ता है। लेकिन यदि हमारी आज्ञा का पालन करे तो, बहुत हो गया। हमारी आज्ञा में ही मोक्ष है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन धीरे-धीरे पचेगा न वह?

दादाश्री : हाँ, धीरे-धीरे पचेगा, इसलिए इसके बाद एक-दो जन्म होंगे। इस भूमिका में पचे ऐसा नहीं है। भूमिका बदलेगी तब पचेगा। महाविदेह क्षेत्र में जाएगा तब पच जाएगा। जब पचेगा तब फल देगा।

प्रश्नकर्ता : आपको तो पच गया है न?

दादाश्री : नहीं, नहीं पचा है। जो बाकी बचा है उतना पचने के लिए एक जन्म और लगेगा। अगर पच जाता, तो निरावृत्त हो जाता, फिर तो मोक्ष में चले जाते।

प्रश्नकर्ता : अत: अभी (फिलहाल) केवलज्ञान नहीं हो सकता?

दादाश्री : यह ज्ञान केवलज्ञान है। दिया जाता है केवलज्ञान लेकिन इस काल में केवलज्ञान

हो नहीं सकता, इसलिए केवलदर्शन होकर रह जाता है। हम यह क्षायक समकित देते हैं, इसलिए ज़्यादा से ज़्यादा अपने दो-तीन जन्म होंगे। लेकिन अब हम मोक्ष में जा पाएँ तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन केवलज्ञान के बिना तो मोक्ष में जा ही नहीं पाएँगे न! केवलज्ञान तो चाहिए न, दादाजी?

दादाश्री : केवलज्ञान हो जाए तो मोक्ष ही है, मोक्ष ही कहलाएगा न! वह एक जन्म में या दो जन्मों में होगा।

प्रश्नकर्ता : अब अक्रम में क्रम नहीं रहा तो केवलज्ञान में भी क्रम नहीं रहना चाहिए, केवलज्ञान होना ही चाहिए न?

दादाश्री : क्रम नहीं रहा, लेकिन जो संग्रह किया है उसका *निकाल* तो करना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : भगवान महावीर को भी ऐसा सब था?

दादाश्री : उन्हें (क्षायक समकित होने के बाद) तीन जन्म लेने के बाद यह (केवलज्ञान) हुआ। उसके बजाय यह तो एकावतारी है! अक्रम यानी एकावतारी हो ही गया है!

कर्मों का निकाल होने से, होगा छुटकारा

प्रश्नकर्ता : आपने जो ज्ञान दिया है, वह विचार प्रवर्तक है या आत्मा को संबोधित करके है?

दादाश्री : यह ज्ञान है ही ऐसा, कि सारे पाप भस्मीभूत कर देता है। कल (ज्ञानविधि में) आपके कितने ही पाप भस्मीभूत हो गए। अब अशांति नहीं होने देंगे, वे पाप अशांति करवाते थे। वे सारे पाप बंद हो गए, सारे भस्मीभूत हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : कर्मों का नाश हो होता है क्या?

दादाश्री : कर्मों की थ्योरी ऐसी है कि सामायिक करते समय अगर विचारणा करेंगे, तो कितने ही कर्म यों ही नाश हो जाएँगे। विचारणा से ही नाश हो जाएँगे और कई ऐसे हैं कि ज्ञानीपुरुष नाश कर देते हैं। और कितने ऐसे हैं कि भुगतने पर ही छुटकारा होगा। उन्हें निकाचित कर्म कहते हैं। वे बर्फ जैसे होते हैं। और जो पानी और भाप जैसे होते हैं उन्हें खत्म कर दिया जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो इस हिसाब से तो इस जन्म में मोक्ष होना मुश्किल है न?

दादाश्री : अभी यह काल ऐसा है ही नहीं कि एक जन्म में हो सके। अत: बहुत हुआ तो यहाँ से एकावतारी, दो-अवतारी या त्रि-अवतारी हुआ जा सकता है। ज्ञानी से ज्ञान मिला हो और आज्ञा में रहे तो हम एकावतारी की गारन्टी देते हैं। यहाँ से (इस क्षेत्र से) तो नहीं हो सकता। मेरा ही चार डिग्री कम पर रुका हुआ है न!

प्रश्नकर्ता : एकावतारी कहा आपने, एक जन्म के बाद मोक्ष होगा ऐसी बात कही तो फिर सब कर्मों का क्या? कैसे होगा?

दादाश्री : सारे कर्मो का *निकाल* हो ही हो जाएगा। साफ (शुद्ध) हो जाएगा। एक जन्म लायक बाकी रहेगा। कोई हमारी आज्ञा का पालन करता है, पाँच आज्ञा यानी एक जन्म के कर्म अर्थात् महापुण्यानुबंधी पुण्य बंधेगा और जहाँ तीर्थंकर होंगे वहाँ शरीर (जन्म) मिलेगा।

कॉज़ेज़ बंद हो गए, अब बचे इफेक्ट

यह विज्ञान ऐसा है! मैं जो आपको दिखाता हूँ, वह केवलज्ञान (एब्सोल्यूट ज्ञान, कैवल्यज्ञान) का आत्मा है और इस जगत् के लोग जिसे आत्मज्ञान कहते हैं, वह शास्त्रीय आत्मज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : पात्रता या अधिकार के बिना यह 'ज्ञान' किस तरह पचेगा?

दादाश्री : पात्रता या अधिकार की यहाँ पर ज़रूरत ही नहीं है। यह आचार की कक्षा पर आधारित नहीं है। बाह्याचार क्या है? पूरा जगत् बाह्याचार पर बैठा है। बाह्याचार, वह 'इफेक्ट' है, 'कॉज़ेज़' नहीं है। 'कॉज़ेज़' हम खत्म कर देते हैं। फिर 'इफेक्ट' तो अपने आप धुल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : संसार के व्यवहार में शुद्धता चाहिए न?

दादाश्री : शुद्धता इतनी अधिक आ जानी चाहिए कि व्यवहार आदर्श कहलाना चाहिए। 'वर्ल्ड' में देखा ही नहीं हो, वैसा सब से उत्तम व्यवहार होना चाहिए। हमारा व्यवहार तो बहुत उत्तम है।

व्यवहार बाधक नहीं है। व्यवहार में एकरूप हो जाते हैं वह बाधक है। एकरूप तो अपने खुद के स्वरूप में होना चाहिए जबकि व्यवहार तो सतही है, सुपरफल्युअस है।

अक्रम में व्यवहार बर्फ समान

प्रश्नकर्ता : अभी हम व्यवहार में काम करते हैं और अगर कोई व्यक्ति गलत कर रहा हो तो वह फंक्शनली गलत है या सही है ऐसा तो हमें व्यवहार में रखना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : व्यवहार में ऐसा है न, जब तक आपकी दृष्टि में आपको वह बात पसंद है तब तक आप व्यवहार करना लेकिन जब आपका वह व्यवहार खत्म हो जाएगा तब फिर वह चीज़ आपको अच्छी ही नहीं लगेगी।

इस अक्रम मार्ग का व्यवहार कैसा है? अक्रम मार्ग का व्यवहार बर्फ जैसा है। यदि एक मन की बड़ी बर्फ की सिल्ली लाने के बाद अगर कोई कहे कि, 'हम तो भूसे में दबाएँगे', तब मैं कहूँगा कि, 'आप चाहे जिसमें दबाना लेकिन आखिर में तो वह पिघलकर खत्म हो जाएगी।' आप उसे बचाने का चाहे कितना भी प्रयत्न करो लेकिन एक दिन वह पिघलकर खत्म हो जाएगी।

व्यवहार एक अवतार में शुद्ध हो जाना चाहिए। अंतिम अवतार में तो व्यवहार शुद्ध ही होना चाहिए। अभी पोल चल सकती है लेकिन वहाँ कुछ पोलमपोल नहीं चलेगी। यह एकावतारी ज्ञान है।

शुद्ध होकर शुद्ध व्यवहार करो अब

इस संसार की बहुत सूक्ष्म शोध की है। अंतिम प्रकार की शोध करके हम ये सारी बातें बता रहे हैं। व्यवहार में कैसे रहना चाहिए, वह भी देते हैं और मोक्ष में कैसे जाया जाए, वह भी देते हैं। आपकी परेशानियाँ कैसे कम हों, वही हमारा हेतु है। क्रमिक मार्ग अर्थात् शुद्ध व्यवहारवाले बनकर शुद्धात्मा बनो और अक्रम मार्ग अर्थात् पहले शुद्धात्मा बनकर, उसके बाद में शुद्ध व्यवहार करो। शुद्ध व्यवहार में व्यवहार तो सभी प्रकार का रहता है लेकिन उसमें वीतरागता होती है। एक-दो जन्म में मोक्ष में जानेवाले होते हैं, तभी से शुद्ध व्यवहार की शुरुआत हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो अब जो पुराने कर्म बाकी रह गए हों, उन्हें जीर्ण करने के क्या उपाय हैं?

दादाश्री : नहीं, अपने आप ही, यह पाँच आज्ञा दी हैं न? उनमें रहने से पुराने कर्मों का समभाव से *निकाल* हो ही जाएगा, नये कर्मबंधन के बिना।

वहाँ उपाय प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान का

प्रश्नकर्ता : लेकिन भारी कर्म बंध गए हों तो उन्हें हमें हल्के से भुगतकर पूरा करना है?

दादाश्री : नहीं, उनका प्रतिक्रमण करते रहना पड़ेगा। जिसका बहुत भारी *चीकणा* (गाढ़) कर्म हो तो उसे ज़्यादा प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे।

ज़्यादा *चीकणा* है ऐसा लगे तो प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करने से सब धुल जाएगा। वह बिल्कुल खत्म नहीं होगा क्योंकि यह एकावतारी ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : अतिक्रमण होते समय जागृति न रहे तो?

दादाश्री : तो क्या ऐसा है कि प्रतिक्रमण नहीं होते?

प्रश्नकर्ता : बाद में पता चलने पर प्रतिक्रमण होते हैं।

दादाश्री : वह तो, फिर उसने झोंका खा लिया लेकिन इस वजह से कर्म नहीं बंधेंगे। कर्म कब बंधते हैं? खुद ऐसा तय करे कि 'मैं चंदूलाल हूँ,' तब। वह झोंका खा लेने का फल तो (कर्म) बाकी रह गया, उसका फल बाद में आएगा। कच्चा नहीं रहना चाहिए। झोंका खा लेगा तो झोंके का फल तो मिलेगा न? कर्ता के तौर पर फल नहीं, बल्कि यह जो कच्चा रह गया, उसका फल आएगा।

साफ होने पर आएगा हल

ज्ञानीपुरुष के ज्ञान देने के बाद, दिव्यचक्षु देने के बाद खुद को खुद के सर्व दोष दिखाई देते हैं। मन में ज़रा-सा बदलाव हो तो भी पता चल जाता है कि यह दोष हुआ। यह तो वीतराग मार्ग, एक अवतारी मार्ग है। यह तो बहुत ज़िम्मेदारी वाला मार्ग है। एक अवतार में सब चोखा हो ही जाना चाहिए। यहाँ पहले चोखा हो ही जाना चाहिए।

अब आपको तो कुछ नहीं करना है। आप तो शुद्धात्मा हो गए, आपको चंदूभाई से कहना है, 'प्रतिक्रमण करो। अतिक्रमण क्यों किया?' क्या कहना है हमें? 'आपने अतिक्रमण किया है इसलिए प्रतिक्रमण करो।' ऐसा कुछ किसी को दान दिया हो, उसके लिए हमें प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यहाँ पर यह विज्ञान धर्मध्यान के समेत है।

अब प्रतिक्रमण नहीं हो पाए तब भी मैं कहता हूँ न कि हर्ज नहीं है लेकिन केवल उन दोषों को देखते रहो और ऐसा जानो कि 'यह चीज़ गलत है'। जब से जाना तभी से वह धर्मध्यान कहलाएगा। अत: यह बाहर से धर्मध्यान है और अंदर से शुक्लध्यान। जब धर्मध्यान और शुक्लध्यान दोनों साथ में हों तब एकावतारी हुआ जा सकता है और जब सिर्फ शुक्लध्यान हो तब मोक्ष हो जाता है। यह मार्ग बिल्कुल अलग है। साफ मार्ग है और स्वभाविक मार्ग है।

उदय स्वरूप है निकाली ही

इसलिए अगर दोष हो जाए तो आपको दोष से चिपकना नहीं है। पहले पुस्तकें पढ़ी हैं इसलिए आपको ऐसा लगता है कि यह क्या हुआ? यह क्या हुआ? हमने अच्छी आदतों और बुरी आदतों दोनों से सेफसाइड कर ली है। हम शुद्धात्मा हैं और हम स्वरूप में आ चुके हैं।

हमारे विज्ञान में यह ज्ञान देते समय अच्छी आदतों और बुरी आदतों, दोनों को एक तरफ रख देते हैं। हम अच्छी आदतों के ग्राहक नहीं हैं और बुरी आदतों के त्यागी नहीं हैं। हम पुण्याचार और पापाचार दोनों को एक तरफ रख देते हैं। हम पुण्य के भी ग्राहक नहीं हैं और पाप के भी त्यागी नहीं हैं। अत: इस एक जन्म के उदय को कोई बदल नहीं सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक के उदय को कोई बदल नहीं सकता।

निर्दोष दृष्टि है, सर्व विरति पद

अपना साइन्स क्या कहना चाहता है, वह मैं आपको बताता हूँ। अभी उदय में दोष निकल रहा है या उदय में अच्छा भाव निकल रहा है, दो ही प्रकार के भाव निकलेंगे न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो उस उदय को देखो जिससे खुद के दोष दिखाई दें। जो दोष वाला है, उसे दोष दिखाई देंगे और अच्छे को अच्छा दिखाई देगा। लेकिन हमें खुद के ही दोष देखने हैं। और कुछ नहीं देखना है।

संसार में रहते हुए भी, किसी के दोष नहीं दिखाई दें तो जानना कि सर्व विरति पद है! 'अक्रम विज्ञान' का ऐसा यह सर्व विरति पद अलग ही प्रकार का है। संसार में रहते हुए, 'धूपेल' ऑइल बालों में डालता है फिर भी, कान में इत्रवाली रूई डालकर घूमे लेकिन उसे किसी का भी दोष नहीं दिखाई देता है।

इसे 'अक्रम' का सर्व विरति पद कहा जाता है कि किसी के भी किंचित्मात्र दोष न दिखाई दे। अन्य किसी भी जीव का दोष न दिखाई दे। कोई गाली दे रहा हो फिर भी उसका दोष न दिखे उसे सर्व विरति कहते हैं। इससे बड़ा सर्व विरति पद और कोई नहीं है।

इस (निजदोष दर्शन के) पुरुषार्थ से अगले जन्म में फर्क पड़ता है लेकिन हम तो ऐसा कहना ही नहीं चाहते कि अगला जन्म सुधारना है। हम तो 'शुद्धात्मा' हो गए और अगला जन्म चाहिए ही नहीं। हम क्या कहना चाहते हैं कि यह जो उदय है, हम उसका *निकाल* कर देते हैं, जानते हैं।

अगुरु-लघु स्वभाव 'खुद' का

यानी जो हो रहा है, हमें वह देखते रहना है कि चंदूभाई की क्या दशा हो रही है, वह हमें देखते रहना है। ज़्यादा-कम, गुरु-लघु कहा है न! गुरु-लघु नहीं? यह अगुरु-लघु स्वभाव का तो है नहीं! इसलिए कम-ज़्यादा होता रहता है। हम जिस स्टेशन पर पहुँचे हैं उस स्टेशन पर जब आप पहुँचेंगे तब आपको भी वैसा रहेगा। यह प्रत्यक्ष सबूत देखा न आपने, पुस्तकों में नहीं है।

राग-द्वेष तो गुरु-लघु स्वभाव के हैं। बढ़ते-घटते हैं और आत्मा खुद अगुरु-लघु स्वभाव वाला वीतराग है। वीतराग तो अब (अनुभव, लक्ष, प्रतीति से) बन गए हैं!

सीधा रहने से हो सकते हैं एकावतारी

हमारे एक-एक शब्द में अनंत-अनंत शास्त्र समाए हुए हैं। इन्हें समझे और सीधा चले तो काम ही *निकाल* दे! एकावतारी बन जाएँ, ऐसा है यह विज्ञान! लाखों जन्म कट जाएँगे! इस विज्ञान से तो राग भी खत्म हो जाएगा और द्वेष भी खत्म हो जाएगा और वीतराग बन जाएँगे। अगुरु-लघु स्वभाव वाला बन जाएगा। अत: इस विज्ञान का जितना लाभ उठाया जाए उतना कम है।

अपना यह मार्ग तो बहुत उच्च प्रकार का है। इस पद को प्राप्त करना ऐसी-वैसी बात नहीं है। तो क्या एकदम से एक साथ खा लेना है? एक और जन्म की ज़रूरत तो पड़ेगी न उसके लिए? नहीं पड़ेगी?

वीतद्वेष बना उसे एकावतारी कहते हैं

अपने यहाँ ज्ञान देते ही सब से पहले द्वेष खत्म हो जाता है अर्थात् आपको वीतद्वेष बना दिया है। अब मेरे साथ बैठ-बैठकर वीतराग बन जाना है। जितने समय तक बैठ सकें उतने समय तक। जो जितना लाभ ले सके उतना।

जो वीतद्वेष बन गया उसे एकावतारी कहा जाता है। जो वीतद्वेष में कच्चा रह गया, उसके दो-चार जन्म होंगे। ज़्यादा से ज़्यादा 15 जन्म होंगे, लेकिन और कोई नुकसान नहीं होगा न! और उसका सुख भी बरतता है न हमें?

कोई गाली दे तो भी उसके साथ 'समभाव से *निकाल*' करते हैं, द्वेष नहीं करते। आपको थोड़ा बहुत ऐसा अनुभव होता है? पूरा अनुभव होता है?

प्रश्नकर्ता : निरंतर अनुभव होता है।

वीतराग बनकर चले जाओ

दादाश्री : वीतराग क्या कहते हैं कि वीतराग बनो! इस जगत् में जो कुछ भी काम करते हो, उसमें काम की कीमत नहीं है लेकिन उसके पीछे राग-द्वेष होंगे तभी अगले जन्म के लिए हिसाब बंधेगा। यदि राग-द्वेष नहीं होते तो ज़िम्मेदार नहीं है! पूरा शरीर, जन्म से मरण तक अनिवार्य है। उसमें से जो राग-द्वेष होते हैं, उतना ही हिसाब बंधता है। इसलिए वीतराग क्या कहते हैं कि वीतराग होकर निकल जाओ!

हमें तो अगर कोई गालियाँ दे तो हम समझ जाते हैं कि ये अंबालाल पटेल को गाली दे रहे हैं, *पुद्गल* को गाली दे रहे हैं। आत्मा को तो वे जान ही नहीं सकते, पहचान ही नहीं सकते न! इसलिए 'हम' स्वीकार नहीं करते। 'हमें' छूता ही नहीं, हम वीतराग रहते हैं! हमें उस पर राग-द्वेष नहीं होते इसलिए फिर एक अवतारी या दो अवतारी होकर सब खत्म हो जाएगा!

वीतराग कोई कच्ची माया नहीं हैं। सभी कच्चे होंगे लेकिन वीतराग जैसे पक्के कोई नहीं हैं, वे तो असल में पक्के हैं! पूरी दुनिया के सभी अक्लमंद उन्हें क्या कहते थे? 'भोला' कहते थे। इन वीतरागों का जन्म हुआ न, तब उनके दोस्त उन्हें कहते थे कि, 'ये तो भोले हैं, मूर्ख हैं।' अरे, तू मूर्ख है। वीतरागों को तो कोई मूर्ख बना ही नहीं सकता, वे इतने समझदार होते हैं। वे खुद धोखा खा जाते हैं, लेकिन रास्ता नहीं चूकते। वे कहेंगे कि, 'मैं धोखा नहीं खाऊँगा, तो यह मुझे मेरे रास्ते पर नहीं जाने देगा।' तो सामने वाला क्या समझता है कि ये कच्चे हैं। अरे, नहीं है यह कच्चा, यह तो असल पक्का है! इस दुनिया में जो जान-बूझकर धोखा खाए, इस दुनिया में उसके जैसा पक्का कोई है ही नहीं और जिन्होंने जान-बूझकर धोखा खाया वे वीतराग बन गए।

जान-बूझकर धोखा खाए वीतराग ही

जिसे अभी भी वीतराग बनना हो, तो जान-बूझकर धोखा खाना। अन्जाने में तो पूरी दुनिया धोखा खा रही है। साधु, सन्यासी, बाबा हर कोई धोखा खा रहा है लेकिन जान-बूझकर धोखा खाए, वे सिर्फ ये वीतराग ही हैं! बचपन से जान-बूझकर हर तरफ से धोखा खाते हैं, वे खुद जान-बूझकर धोखा खाते हैं फिर भी वापस धोखा देनेवाले को ऐसा नहीं लगने देते कि तूने मुझे धोखा दिया है, नहीं तो मेरी आँख तू पढ़ जाएगा। वे तो आँख में भी नहीं पढ़ने देते, वीतराग ऐसे पक्के होते थे! वे जानते थे कि इसका *पुद्गल* का व्यापार है, उस बेचारे को तो *पुद्गल* लेने दो न, मुझे तो *पुद्गल* दे देना है! लोभी हो तो उसे लोभ लेने देते, मानी हो तो उसे मान देकर भी खुद का हल (निबेड़ा) ले आते थे, खुद का रास्ता नहीं चूकते थे। खुद का मूल मार्ग जो प्राप्त हुआ है उसे चूकते नहीं थे, वीतराग ऐसे समझदार थे। और अभी भी जो ऐसा मार्ग पकड़ेगा उसके मोक्ष में परेशानी ही क्या आएगी? 'ज्ञानीपुरुष' का तो आज यह शरीर है और कल यह बुलबुला फूट जाएगा तो क्या मोक्षमार्ग खत्म हो जाएगा? तो कहा है, 'नहीं, यदि इतनी शर्त होगी कि जिसे मोक्ष के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की कामना नहीं है और जिसे खुद जान-बूझकर धोखा खाना है, जिसमें, ऐसे कुछ लक्षण होंगे तो उसका मोक्ष कोई रोक सकता नहीं। यों ही, अकेला ही, ज्ञानी के बिना भी दो अवतारी होकर वह मोक्ष में चला जाएगा!'

धर्मध्यान से पुण्य फल या मोक्ष?

ज्ञानी अर्थात् लाइसन्स धारक व्यक्ति। पूरे वर्ल्ड का लाइसन्स होता है उनके पास। जहाँ देवगण

बैठते हैं, देवी-देवता भी सुनने आते हैं, ऐसा है यह विज्ञान। यह परमहंस की सभा कही जाती है। जहाँ आत्मा व परमात्मा के सिवा अन्य कोई बात नहीं है, संसार से संबंधित बात नहीं है लेकिन यह (विज्ञान) धर्मध्यान सहित है। अपना अक्रम है न!

प्रश्नकर्ता : धर्मध्यान से क्या होता है? पुण्य बंधता है?

दादाश्री : धर्मध्यान दो प्रकार के हैं। अहंकार से किया गया धर्मध्यान, उससे भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। मोक्षमार्ग पर जाते हुए अन्य संयोग भी मिल आते हैं, सत्संग की प्राप्ति भी धर्मध्यान का फल है, लेकिन अहंकार के कारण और हम जिसे धर्मध्यान कहते हैं, वह तो निर्‌हंकारी ध्यान है। निर्‌हंकारी धर्मध्यान एकावतारी बनाता है। एक ही जन्म बाकी रहता है, उसके बाद फिर मोक्ष हो जाता है।

आज्ञापालन से एकावतारी पद

इस 'अक्रम ज्ञान' को प्राप्त करने के बाद एक या दो जन्मों में हल आ जाए, ऐसा है। अब जन्म बाकी रहना या नहीं रहना, वह ध्यान पर आधारित है। निरंतर सिर्फ शुक्लध्यान ही रहे तो दूसरा जन्म होगा ही नहीं, परंतु अक्रम मार्ग में शुक्लध्यान और धर्मध्यान दोनों रहते हैं। अंदर शुक्लध्यान रहता है और बाहर धर्मध्यान रहता है।

धर्मध्यान क्यों होता है? 'दादा' के कहे अनुसार आज्ञा का पालन करना होता है इसलिए। आज्ञा पालन करना, वह शुक्लध्यान का काम नहीं है, वह धर्मध्यान का काम है। इसलिए धर्मध्यान के कारण एक या दो जन्मों जितना 'चार्ज' होता है।

और आज तमाम शास्त्र एक साथ कहते हैं कि इस काल में किसी भी व्यक्ति को शुक्लध्यान नहीं हो सकता, और बात भी सही है, गलत नहीं है लेकिन यह तो अक्रम विज्ञान है। बाकी, वह (शुक्लध्यान) क्रमिक मार्ग से प्राप्त नहीं हो सकता। यदि शुक्लध्यान हो जाए, तो वह शुक्लध्यान तो मोक्ष का कारण है। तो एकावतारी बन जाएगा। यहाँ से सीधा मोक्ष में नहीं जा सकेगा। कोई व्यक्ति एकावतारी बन सकता है और कोई थोड़ा कमज़ोर हो और यदि (हम से) मिल नहीं पाता, तो उसके दो जन्म होंगे, तीन जन्म होंगे, पाँच जन्म होंगे लेकिन पंद्रह जन्मों से ज़्यादा नहीं होंगे और यों ही यदि हमें छू लिया होगा, वह भी एक हद में आ जाएगा। बाकी सभी के लिए तो हद है ही नहीं, और यदि इस हद में आ गया और ज्ञान ले गया है, पाँच आज्ञाओं का पालन करता है तो उसकी तो बात ही अलग है, पंद्रह में आ गया वह!

अपना यह विज्ञान ऐसा है कि ठेठ पार उतार दे! अगर इन्हें सिन्सियर रहा, ज्ञानी की पाँच आज्ञाओं में रहा तो, वे आज्ञा ही धर्मध्यान हैं, इसलिए एक जन्म बाकी रहेगा, वर्ना मोक्ष हो जाता।

नहीं है कर्तापद आज्ञापालन में

आप अगर मन में तय करते हो कि मुझे दादा की आज्ञा का पालन करना ही है, तो वह कर्तापद नहीं है, वह धर्मध्यान है। बिल्कुल भी कर्तापद में नहीं रखा है, अगर ऐसा कहेंगे तो चलेगा। पाँच आज्ञा के अधीन आपका जो भी कर्तापद है, वह कर्तापद आज्ञा के अधीन है। वह कर्तापद आज्ञा के आधीन है, इसलिए आप के सिर पर ज़िम्मेदारी नहीं है। तभी तो आज्ञा देनी पड़ती है, वर्ना यदि खुद फिर से कर्ता बन जाएगा तो कर्म बंधेगे।

आप जो कर्ता बने, उसकी ज़िम्मेदारी आज्ञा की अधीनता रखने की वजह से है, वर्ना ज़िम्मेदारी आपकी रहेगी। इसलिए आज्ञा की अधीनता, उतना कर्तापद रहने दिया है और वह कर्तापद वास्तव में कर्तापद नहीं है। क्योंकि आज्ञा की अधीनता है

इसलिए खुद की ज़िम्मेदारी नहीं रहती। मैं कहूँ किसी से कि 'भाई तू यह कर, तो उसने वह मेरी आज्ञा से किया। इसलिए वह मिकेनिकल कहलाएगा। जोखिमदारी मुझ पर आएगी। यह भी वैसा ही है।

शुद्धात्मा का *लक्ष*, वह है शुक्लध्यान

अब यह जो ध्यान है, वह कौन से ध्यान का उपादेय है। 'शुक्लध्यान का उपादेय है।' 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यह *लक्ष* (जागृति,ध्यान) बैठा, वह उपादेय, शुक्लध्यान कहलाएगा। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह *लक्ष* चला गया और वह *लक्ष* बैठ गया। व्यवहार चलाने जितना, व्यवहार से आपको ऐसा कहना पड़ेगा कि 'मैं चंदूभाई हूँ'। अगर दुकान में से साझेदारी रद करने के बाद वह कहे कि 'आपका नाम रहने दो,' तब क्या हम समझ नहीं जाएँगे कि भागीदारी रद कर दी है लेकिन सिर्फ व्यवहारिक तौर पर नाम रखा है! जब इन्कमटैक्स वाला आता है तब 'हाँ' कहते हैं न कि, 'हाँ, हमारा है।' नहीं कहना पड़ता? उसे ऐसा कह सकते हैं कि 'हम ने रद कर दिया है?' ऐसा तो व्यवहार में कहना पड़ता है कि 'मैं चंदूभाई हूँ।' लेकिन जिसका आर्तध्यान और रौद्रध्यान गए और जिसे शुक्लध्यान है, उसका मोक्ष एक-दो जन्मों में हो ही जाएगा।

शुक्लध्यान का पहला और दूसरा चरण

शुक्लध्यान के चार चरण हैं। उनमें से पहला है अस्पष्टवेदन। अर्थात् वस्तु है, ऐसा तय हो गया। वस्तु है, ऐसा हमें भान हुआ है, लेकिन उसका स्पष्टवेदन नहीं हो पाता। 'शुद्धात्मा हूँ' का *लक्ष* आ गया, लेकिन अस्पष्टवेदन पहला चरण है। दूसरा है स्पष्टवेदन।

प्रश्नकर्ता : क्या उसमें निरंतर *लक्ष* रह सकता है?

दादाश्री : नहीं, *लक्ष* नहीं रखना है। स्पष्टवेदन कब होता है? बाहर आपको दर्शन में सब आ गया है, लेकिन रूपक में नहीं आया है और जब रूपक में आएगा तब स्पष्टवेदन हो जाएगा। कुछ हिस्सा रूपक में आ गया है। व्यापार-रोज़गार वगैरह में से समझकर छूट गए हैं लेकिन ज्ञानपूर्वक नहीं छूटे हैं। अत: जब ज्ञानपूर्वक छूट जाएगा तब स्पष्टवेदन होगा। वह जो स्पष्टवेदन होगा वह दूसरा चरण। फिर तीसरा है केवलज्ञान, जो सबकुछ दिखाता है।

प्रश्नकर्ता : लोकालोक।

दादाश्री : हाँ, लोकालोक। अभी हमें (दादा को) लोकालोक समझ में आता है लेकिन रूपक में नहीं आ पाता। अर्थात् केवलदर्शन में है।

अभी अगर यह पहला चरण हो गया, तो भी बहुत हो गया। फिर हमें और काम ही क्या है? जैन शास्त्र तो क्या कहते हैं, 'पहला चरण, ओहोहो! यह तो भगवान बन गया!' बारहवें गुणस्थानक के बगैर पहला चरण नहीं आ सकता। दसवें गुणस्थानक तक कभी भी पहला चरण नहीं छू पाता और वह पहला चरण यहाँ आपको प्राप्त हुआ है! ग्यारहवाँ गुणस्थानक, वह गिरने का स्थान है।

दसवें गुणस्थानक तक लोभ रहता है, सूक्ष्म लोभ रहता है। जब तक वह लोभ खत्म नहीं हो जाता, तब तक बारहवाँ गुणस्थानक नहीं आता। फिर वह लोभ चाहे किसी भी तरीके से खत्म हो, क्रमिक से या अक्रम से लेकिन लोभ खत्म होने के बाद बारहवें गुणस्थानक को स्पर्श कर पाता है। जब तक लोभ है, तब तक अहंकार नहीं जाता।

प्रश्नकर्ता : लोभ तो अनेक प्रकार का रहता है। लोभ तो ज्ञान प्राप्त करने का भी रहता है।

दादाश्री : लोभ तो सभी प्रकार के रहते

हैं, कई तरह के। जब तक वह लोभ है तब तक दसवाँ गुणस्थानक पार नहीं कर सकता और तब तक अहंकार खत्म नहीं होता। अहंकार बारहवें में खत्म हो जाता है। अहंकार खत्म हो जाने पर ऐसा कहा जाता है कि बारहवें तक पहुँच गया। फिर वह भले ही किसी भी तरीके से खत्म हुआ हो। अक्रम से या चाहे कैसे भी लेकिन उसने बारहवें गुणस्थानक में प्रवेश किया, तो वह शुक्लध्यान का पहला चरण कहलाएगा।

शुक्लध्यान का तीसरा चरण - केवलज्ञान

केवलज्ञान हो जाने पर, वह तेरहवाँ गुणस्थानक कहलाता है। केवलज्ञान, शुक्लध्यान का तीसरा चरण और तेरहवाँ गुणस्थानक, ये तीनों एक साथ ही होते हैं जबकि हमारा यह बारहवाँ गुणस्थानक ही है। अत: आप उसका स्वाद चखते रहो। धीरे-धीरे अपनी सभी शक्तियाँ खिलेंगी। अब सभी आवरण टूटकर सबकुछ खत्म होने लगेगा। मुख्य आवरण टूट गया है। अत: शक्तियाँ खिलेंगी।

प्रश्नकर्ता : अंतर में शुभ भाव के अलावा बाकी कुछ भी नहीं रहता।

दादाश्री : इस समय व्यवहार से धर्मध्यान योग है और निश्चय से शुक्लध्यान दशा है। व्यवहार गुणस्थानक अब ऊपर उठता जाता है। पाँचवें से छठवें पर जाएगा, सातवें पर जाएगा, आठवें पर जाएगा। व्यवहार में जब स्त्री का (विषय का) परिचय छूट जाता है तब नौवाँ पार करेगा। जब लक्ष्मी से संबंधित कुछ नहीं रहेगा, तब व्यवहार से दसवाँ पार करेगा। धीरे-धीरे अब (महात्माओं का) व्यवहार बेहतर होता जाएगा।

जो हमारी पाँच आज्ञाओं में रहेगा उसे व्यवहार में बारहवाँ गुणस्थानक रहेगा लेकिन पाँच आज्ञा में संपूर्णरूप से रह पाना संभव नहीं है। ज़्यादा से ज़्यादा नौवें गुणस्थानक तक पहुँच सकते हैं।

हमें निश्चय का गुणस्थानक चाहिए था वह मिल गया है तो बहुत हो गया। यह व्यवहार तो ऊपर आए या नहीं आए, हमें व्यवहार का इनाम नहीं चाहिए। हमें तो एकावतारी होकर मोक्ष में जाना है। हमें अंदर परमानंद रहना चाहिए। वह निरंतर रहता है न?

शुक्लध्यान का चौथा चरण - मोक्ष

जिस रास्ते पर हम चले हैं, वही रास्ता आपको भी दिखा दिया है। और मुझे जो गुणस्थानक प्रकट हुआ है, बारहवाँ गुणस्थानक, वह बारहवाँ गुणस्थानक आपका भी हो जाता है। इस काल में तो जहाँ साधुओं में भी चौथे गुणस्थानक का ठिकाना नहीं है, वहाँ बारहवाँ गुणस्थानक! बारहवें गुणस्थानक का कारण क्या है? शुद्धात्मा का *लक्ष* आ गया है!

बारहवें गुणस्थानक में आप हैं, बारहवें में मैं हूँ और तेरहवें में भगवान महावीर थे, जब उन्हें केवलज्ञान हुआ था तब और चौदहवाँ गुणस्थानक मोक्ष का कहलाता है। निश्चय से आपका और हमारा बारहवाँ गुणस्थानक एक ही है, लेकिन डिफरेन्स (अंतर) क्या है? आपका शुक्लध्यान पहले स्तर का है और मेरा दूसरे स्तर का है। हम शुक्लध्यान के दूसरे स्तर पर हैं, स्पष्टवेदन रहता है और इस शुक्लध्यान के तीसरे पाये में केवलज्ञान हो जाता है और चौथे पाये में मोक्ष में पहुँच जाते हैं!

अपने यहाँ तो गुरु-शिष्य का भेद रखा ही नहीं है। आपको हमारे साथ ही बैठाया है। निश्चय से बारहवें गुणस्थानक में हमारे साथ ही बैठाया है और वह भी शुक्लध्यान में! अपना यह किस आधार पर निश्चय से बारहवाँ गुणस्थानक कहलाता है? क्योंकि शुक्लध्यान उत्पन्न हुआ है। शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया है! शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठना और प्रतीति बैठनी, उसे शुक्लध्यान

कहा जाता है। 'क्रमिक मार्ग' में प्रतीति के जाले बनते हैं और थोड़ी प्रतीति होती है। जब वह पूर्ण हो जाए तब क्षायक समकित होता है और तब 'शुद्धात्मा' का *लक्ष* बैठता है, जबकि इस 'अक्रम मार्ग' में तो पहले *लक्ष* बैठा देते हैं और उसके बाद प्रतीति तो रहती ही है! यह 'अक्रम मार्ग' है न, इसीलिए पहले *लक्ष* बैठ जाता है। 'क्रमिक मार्ग' में तो जिसे प्रतीति बैठी हुई हो, उसे भी शुक्लध्यान नहीं रहता क्योंकि इस काल में 'क्रमिक मार्ग' में कोई सातवें गुणस्थानक से आगे नहीं जा सकता।

अप्रमत्त गुणस्थानक, वह क्या है?

बाकी, सातवाँ गुणस्थानक सब से बड़ा माना जाता है। सातवाँ गुणस्थानक अप्रमत्त गुणस्थानक है। उसका अर्थ क्या है? वह यह है कि शब्दों से 48 मिनटों तक ऐसा रहे कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', अन्य कर्मों का उदय ही नहीं आए उसे अप्रमत्त कहा गया है। 49 मिनट होते ही फिर 'मैं आचार्य हूँ और मैं यह हूँ, वह हूँ' वापस फिर से वही सब। 48 मिनटों के लिए ही। पूरी ज़िंदगी में एक ही बार ऐसा आता है या दो बार भी आ सकता है, किसी को पाँच बार भी आता है लेकिन वह उदय कहलाता है। फिर बाद में चतुर्थी और पंचमी के झगड़े भी करते हैं। लेकिन यह अप्रमत्तपना तो सिर्फ 48 मिनटों के लिए ही रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह दिया गया शुद्धात्मा नहीं, बल्कि उसे खुद को जागृति में रहे, वह अप्रमत्त कहलाता है। वर्ना शुद्धात्मा तो किसी को याद ही नहीं रहता। किसी को कोई भान ही नहीं रहता।

अंतिम स्टेशन की बात है यह

यह तो अक्रम विज्ञान है और, संपूर्ण विज्ञान है। पूरा विज्ञान अविरोधाभासी है। कहीं से भी आप काटो लेकिन विरोधाभास निकलेगा ही नहीं। जब भी पूछोगे न, तब वही का वही रहेगा। जब भी पूछो तब वही का वही जवाब। एक ही बात, एक ही तरीका, एक ही रेल्वे लाइन और अंतिम स्टेशन की बात है यह। बीच के स्टेशन की बात है ही नहीं। किसी का पुरुषार्थ अगर थोड़ा मंद पड़ जाए तो एकाध जन्म ज़्यादा लेगा, लेकिन उस वजह से कोई खास नुकसान नहीं होगा। फिर भी यह संसार पुरुषार्थ मंद करने जैसा नहीं है।

निरंतर यह ध्यान रहा करे कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', आपको आत्मा का वेदन रहा करे। अंदर से *लक्ष* रहा करे, जागृति रहा करे तो उसे स्व-संवेदन कहा जाता है। उससे लाभ भी होता रहता है, निराकुलता का लाभ भी मिलता रहता है। व्याकुलता वाली जगह पर निराकुलता में रह पाते हैं और हम तो भयंकर व्याकुलता वाली जगह में भी निराकुलता में रहे हैं, इसे तो टेस्टेड (अनुभवसिद्ध) कहा जाएगा।

स्पष्टवेदन का उपाय क्या?

आपका व्यवहार गुणस्थानक अभी ऊपर उठाना बाकी है। अब जितना आप समभाव से *निकाल* करोगे, उतना ही व्यवहार गुणस्थानक ऊपर उठेगा तब फिर व्यवहार तंग नहीं करेगा। अभी तो व्यवहार का पाँचवाँ गुणस्थानक है। लेकिन जैसे-जैसे ऊपर आएगा न वैसे-वैसे व्यवहार बाधक नहीं होगा। हमारा व्यवहार का गुणस्थानक बहुत उच्च प्रकार का है, बारहवाँ गुणस्थानक, लेकिन हमारा स्पष्ट अनुभव व स्पष्टवेदन है और आपका अस्पष्टवेदन। आत्मा का वेदन तो है लेकिन अस्पष्ट। उसका सुख तो आता है लेकिन स्पष्टरूप से समझ में नहीं आता। उसे सुख उत्पन्न होता है, आत्मा हाज़िर हो चुका है इसलिए सुख उत्पन्न होता है। सुख स्वाभाविक है। स्वभाव परमानंदी है लेकिन अपने विचार सुख नहीं आने देते, उसे हम तक पहुँचने नहीं देते। वे बीच में बाधा डालते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो स्पष्टवेदन कैसे करें, दादा?

दादाश्री : सत्संग में रहने से। यहाँ सत्संग में पड़े रहने से, आज्ञाओं में रहने से व्यवहार गुणस्थानक दिनोंदिन ऊपर ऊठता जाता है और स्पष्टवेदन बंधता है। सारे कर्म कम हो जाते हैं न दिनोंदिन। जिस बर्तन को खाली करने लगेंगे वह बर्तन खाली हो जाएगा न? भले ही घी चम्मच से दे लेकिन बर्तन तो खाली हो जाएगा न! जैसे-जैसे कर्मों की निर्जरा होती रहेगी, वैसे-वैसे हल्का होता जाएगा। यह तो अक्रम है अत: बिना कर्म खपाए आत्मा प्राप्त हो गया है। वह तो क्रमिक है अत: कर्म खत्म करते-करते आगे बढ़ना है। वह बहुत मुश्किल है।

कैसा अलौकिक विज्ञान यह!

जब हम ज्ञान देते हैं, उस समय सबकुछ विलय होकर भस्मीभूत हो जाता है। यह ऐसा अलौकिक विज्ञान है। यह तो आश्चर्यजनक विज्ञान है! पूरा बारहवाँ गुणस्थानक ही है, उसे व्यवहार में लाया जा सकता है। व्यवहार में लाना आपके हाथ में है। निश्चय से मैंने दे दिया है लेकिन आपको मुझ से समझ लेने की ज़रूरत है कि 'भई हकीकत में यह क्या है?'

फाइलों का *निकाल* होने पर आएगा हल

प्रश्नकर्ता : एक-दो जन्मों के बाद जब हमारा स्वरूप इतना शुद्ध हो जाएगा तब मोक्ष होगा न?

दादाश्री : स्वरूप तो शुद्ध हो गया है, अब दुकान खाली करनी बाकी है। जो दुकानदार था, वह दुकान का विकास कर रहा था। फिर अंदर से थक गया और बहुत दु:खी हो गया, तब कहने लगा, 'जाने दो! अब दुकान खाली कर देनी है।' अत: दुकान खाली करने की शुरुआत की है। जब ज्ञानीपुरुष मिल जाते हैं, तब ज्ञानीपुरुष दुकान खाली करने के उपाय बताते हैं कि कैसे खाली करनी है? फिर दुकान खाली कर देंगे। ज्ञानीपुरुष ने जो शर्तें रखी हों, उन सभी शर्तों से लेकिन समभाव से *निकाल* कर देना है पूरा।

प्रश्नकर्ता : दादा! अभी तो हमें ज्ञानी, सत्पुरुष मिल गए हैं लेकिन जो एक-दो जन्म बाकी बचे हैं तब उस समय हमें दूसरे कोई मिल जाएँगे या फिर किसी की ज़रूरत ही नहीं रहेगी?

दादाश्री : अब कुछ भी मिलने की ज़रूरत ही कहाँ रही! जिस तरह दुकान खाली कर देनी है। फाइलों का *निकाल* हो जाएगा। फिलहाल इन्टरिम गवर्मेन्ट है। क्यों? क्योंकि दो काम करने हैं, अपने खुद के स्वरूप की जागृति रखनी है, यानी (स्वरूप में) रमणता करनी है और जब फाइल आ जाए तब फाइल हल करनी है। तब तक इन्टरिम गवर्मेन्ट है। जब फाइलों का *निकाल* हो जाएगा, तब फुल गवर्मेन्ट। जब फाइलों का *निकाल* करने लगेंगे तो फिर कुछ बचेगा ही नहीं न।

बाकी, खुद के स्वरूप का भान तो पूरे दिन रहा ही करता है, निरंतर भान रहता है! ऑफिस में काम कर रहे हों, तब भी भान रहता है। ज़रा गाढ़ (जटिल) काम हो तो वह काम पूरा होते ही तुरंत वापस भान में आ जाता है।

क्रिया यदि गाढ़ हो तो, जैसे आधे इंच के पाइप से पानी गिर रहा हो तो हम ऐसे नल के नीचे हाथ रखें तो हाथ खिसक नहीं जाता और डेढ़ इंच के पाइप में से 'फोर्स' से पानी आ रहा हो तो हाथ खिसक जाता है। इसी प्रकार यदि बहुत भारी गाढ़ कर्म हों तो वे विचलित कर देते हैं। उसमें भी हमें हर्ज नहीं है। क्योंकि हमें एक जन्म में हिसाब साफ करना है न? हिसाब साफ किए बिना मोक्ष में जाया नहीं जा सकेगा न!

प्रश्नकर्ता : हिसाब साफ नहीं करें तो पुनर्जन्म लेना पड़ेगा?

दादाश्री : हाँ, इसलिए ही पुनर्जन्म मिलता है। यानी हिसाब बिल्कुल साफ हो जाना चाहिए, तो हल आएगा।

'दादा' द्वारा दिखाया गया यह मोक्ष सीधा है, एक अवतारी है। अत: संयम में रहो और 'फाइलों' का समभाव से *निकाल* करो। और उस संपूर्ण मोक्ष के लिए तो दोनों प्रकार के संयम की ज़रूरत है लेकिन यहाँ से एक अवतारी तो बन सकता है। बाहरी संयम तो बाद में अगले जन्म में आ जाएगा लेकिन आंतरिक संयम आना बहुत कठिन है।

घर्षण से होता है शक्तियों का हनन

यदि पूरी तरह से आत्मशक्ति खत्म होती हो, तो वह घर्षण से। ज़रा सा भी टकराए तो खत्म। सामने वाला टकराए, तब हमें संयमपूर्वक रहना चाहिए। टकराव तो होना ही नहीं चाहिए। फिर चाहे यह देह भी जानी हो तो जाए, चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति आए लेकिन टकराव में नहीं आना चाहिए। यदि सिर्फ घर्षण न हो, तो मनुष्य मोक्ष में चला जाए। किसी ने इतना ही सीख लिया कि 'मुझे घर्षण में नहीं आना है', तो फिर उसे गुरु की या अन्य किसी की भी ज़रूरत नहीं है। एक या दो जन्मों में सीधे मोक्ष में जाएगा।

तब होगी पूर्णाहुति

जिसका टकराव नहीं होगा, उसका तीन जन्मों में मोक्ष हो जाएगा, उसकी मैं गारन्टी देता हूँ। टकराव हो जाए, तो प्रतिक्रमण कर लेना। टकराव *पुद्गल* का है और *पुद्गल* से *पुद्गल* का टकराव प्रतिक्रमण से खत्म होता है।

प्रतिक्रमण करते-करते आगे बढ़ेगा, तब फिर पूर्णाहुति होगी! प्रतिक्रमण करने लगे तो फिर पाँच या दस जन्मों में भी पूर्णाहुति हो जाएगी! एक जन्म में शायद खत्म न भी हो।

फाइलों की वजह से रुका हुआ है स्पष्टवेदन

प्रश्नकर्ता : दादा, अपने ज्ञान के बाद महात्माओं को इतना पता चला है कि आत्मा अनंत सुख का धाम है। अब स्पष्टवेदन का वह जो अनुभव होना चाहिए, उसके बाधक कारण क्या है?

दादाश्री : उस वेदन में बाधक कारण है फाइलों का अत्यंत ज़ोर। यदि फाइलों का ज़ोर ज़्यादा नहीं रहे तो अनुभव बढ़ता जाएगा।

अत: यह जो फाइलों का ज़ोर है न, उसकी वजह से ऐसा होता रहता है। फाइलें कम होंगी तो अपने आप ही फर्क पड़ता जाएगा। फाइलें कम हो जाएँ, ऐसा करो। पाँच आज्ञा का पालन करो। बस उतना ही करना है, अन्य कुछ नहीं करना है।

ये सारी फाइलें कम हों जाएँगी न, उसके बाद तो आनंद समायेगा नहीं। आनंद उमड़ेगा और पड़ोसवालों को भी लाभ होगा। क्योंकि कोई भी चीज़ उमड़ पड़े तब बाहर निकलती है, और जितना बाहर निकलता है वह औरों के काम आता है। अत: पड़ोसी को भी लाभ होगा। इस समय तो फाइलों का *निकाल* करने में ही आनंद नहीं आता। ये सारी दखल, उस आनंद को चखने नहीं देती।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान मिलने के बाद कितने समय में फाइल का *निकाल* हो जाएगा?

दादाश्री : वह तो जितनी गाढ़ हों, उतना। ऐसे बहुत गाढ़ हों तो पूरी ज़िंदगी चलती रहती है और और फीकी हो तो दस-बारह महीनों में खत्म हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : एक लाइफ में हो जाएगा या दो-चार लाइफ में? कितना समय लगेगा ज्ञान मिलने के बाद?

दादाश्री : नहीं! बस एक-दो जन्म। जिसे *निकाल* करना है, उसे देर नहीं लगेगी। *निकाल* नहीं करना है, उसे बहुत वक्त लगेगा। जिसे निबेड़ा लाना है, उसे देर नहीं लगेगी। आत्मशक्ति का मुख्य स्वभाव क्या है कि यदि आपको निबेड़ा लाना है, तो वह निबेड़ा लाने में हेल्प करेगी। निबेड़ा लाना हो तो अक्रम में आ जाना और अभी आ ही गया है वह मार्ग।

'ध्येय' है सिर्फ उस दशा को प्राप्त करना

प्रश्नकर्ता : जब स्पष्टवेदन होगा तब तो विषय विकार भी नहीं रहेंगे न?

दादाश्री : जब तक यह विषय रहेगा, तब तक स्पष्टवेदन होगा ही नहीं। स्पष्टवेदन कब होगा कि जब इस मन-वाणी-देह में खुद का मालिकीपन नहीं रहेगा। हमारी निर्विचार दशा है। हमारी निर्विकल्प दशा है, हमारी निरीच्छक दशा है, तब जाकर यह दशा उत्पन्न हुई है। धन्य-धन्य है उस दशा को! हम उसे नमस्कार करते हैं। अत: उस दशा तक पहुँचना है। फिर एकाध स्टेशन बाकी रहा है, तो भले ही रहा। इतने सारे स्टेशन पार कर लिए, अब एक का क्या हिसाब? और वह भी भगवान की हद में ही है, सिग्नल भी आ गया है, सबकुछ आ गया, कब का आ गया। आपने भी सिग्नल पार कर लिया है। प्लेटफार्म तो नहीं आया लेकिन सिग्नल तो पार कर लिया है।

प्रश्नकर्ता : भगवान की हद और भगवान की उपस्थिति दोनों ही।

दादाश्री : हाँ, भगवान की हद और भगवान की उपस्थिति! वह तो कल्याण ही कर देगी न!

अब यह जोखिमदारी समझना

भगवान ने आत्मा के दो भेद बताए; एक संसारी और दूसरे सिद्ध। जो मोक्ष में चले गए हैं, वे सिद्ध कहलाते हैं और बाकी के सभी संसारी। अत: यदि आप त्यागी हो, फिर भी संसारी हो और ये गृहस्थ भी संसारी हैं। इसलिए आप मन में कुछ रखना मत। संसार बाधक नहीं है, कुछ भी बाधक नहीं है, अज्ञान बाधक है। और जो अहंकार बाधक है, वह अहंकार हमने ले लिया है।

यह 'अक्रम विज्ञान' है। विवाह करने पर भी मोक्ष चला जाए, ऐसा नहीं है। आप सभी संसारी हो और होना चाहते हो एकावतारी, तो उसका मेल कैसे बैठेगा? ये जैन शास्त्र स्पष्ट मना करते हैं, आचार्य भी मना करते हैं, फिर अपने लिए यह मेल कैसे बैठ गया?

बीवी-बच्चों के साथ रहते हुए भी मोक्ष हो जाए, हमने वह रास्ता दिखाया है। अभी यहाँ से सीधा मोक्ष नहीं है। वीतरागों की बात बिल्कुल सही है कि यदि सीधे ही मोक्ष में जा पाते तो इस अंतिम जन्म में बीवी-बच्चों को छोड़ना पड़ता, लेकिन यह तो एकावतारी पद है। मोक्ष का और संसार का क्या लेना-देना? एक भी कर्म नहीं बंधेगा, उसकी हम गारन्टी देते हैं। स्त्री-बच्चों के साथ रहते हुए भी नया कर्म नहीं बंधेगा।

ऐसी 'समझ' कौन देगा?

इन बहन का तो निश्चय है कि 'एक ही जन्म में मोक्ष में जाना है। अब यहाँ नहीं चलेगा, इसलिए एक अवतारी ही बनना है।' तो फिर उन्हें सभी साधन मिल गए, ब्रह्मचर्य की आज्ञा भी मिल गई!

प्रश्नकर्ता : हम भी क्या एक अवतारी बनेंगे?

दादाश्री : तुझे थोड़ी देर लगेगी। अभी तो थोड़ा हमारे कहे अनुसार चलने दे। एक अवतारी तो (ब्रह्मचर्य की) आज्ञा में आने के बाद, इस ज्ञान में आने के बाद काम होगा। यों तो आज्ञा के बिना भी मोक्ष दो-चार जन्मों में होने वाला है, लेकिन

अगर आज्ञा में आ जाए तो एक अवतारी हो जाए! इस ज्ञान में आने के बाद हमारी आज्ञा में आना पड़ेगा। अभी तक आप सभी को ब्रह्मचर्य की आज्ञा दी नहीं है न? वह हम जल्दी से देते भी नहीं हैं क्योंकि सभी को पालन करना नहीं आता, अनुकूल नहीं रहता। उसके लिए तो मन बहुत मज़बूत होना चाहिए।

यह ज्ञान ऐसा है कि एकावतारी बना दे, लेकिन सतर्क रहना चाहिए और मन में ज़रा सा भी दग़ा नहीं रखना चाहिए। यह विषय शौक की चीज़ नहीं है, (विवाहितों के लिए) *निकाल* करने जैसी चीज़ है।

विषय में फँसा वह लटका

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, यदि एक जन्म में ही मोक्ष जाना हो, तो क्या करना चाहिए? वह बताइए न! आज हम वही तय कर लें।

दादाश्री : कोई जैन हो, उसे पुलिस वाला पकड़कर तीन दिन भूखा रखे और फिर मांस खाने को दे कि, 'तुझे यही खाना पड़ेगा' और फिर वह उसे खाए, तो वह बंधन में नहीं आता। ऐसा पुलिस वाले के दबाव से है, उसकी खुद की इच्छापूर्वक नहीं है। ऐसा स्वाधीन नहीं होना चाहिए। पुलिस वाले के अधीन, भूख के अधीन होकर मांसाहार करो तो आप गुनहगार नहीं हो। वैसा ही यदि विषय में रहेगा, तो वह अवश्य ही एकावतारी बनेगा।

प्रश्नकर्ता : आपकी इस आज्ञा का पालन करेंगे। अब एकावतारी पद लिख दीजिए।

दादाश्री : यदि हमारी इतनी सी बात का पालन करे तो हम एकावतारी बॉन्ड लिख देंगे। एकावतारी बनना हो तो यही एक चीज़ संभालनी है। बाकी अन्य व्यापार-धंधे मे हर्ज नहीं है।

अब हल आएगा ज़रूर

सारा माल रबिश (कचरा) माल है, वह भी चारों काल का। पहले सत्युग में छाना और फिर जो नहीं छना उसे डाला द्वापर में। द्वापर में छाना उसमें जो नहीं छना उसे त्रेता में डाला। त्रेता में जो नहीं छना वह कलियुग में आया। यह चोकर है, उसे हमने इस छलनी में डाला है, जितना छन जाएगा उतना ठीक है, फिर राम तेरी माया! जो हमारी छलनी में छनेगा, वह एक अवतारी बनेगा। अंत में दो जन्मों में, पाँच जन्मों में लेकिन कुछ हल आ जाएगा!

ज़रूरत है, निरंतर जागृति की ही

मैं ये जितनी भी बातें कर रहा हूँ, उन सभी के बारे में मुझे जागृति होगी या नहीं है?

प्रश्नकर्ता : है ही।

दादाश्री : पूरी जागृति रहती है। अभी तो बहुत ही जागृति। सिर पर जितने बाल हैं न, उतनी जागृति बरतती है मुझे। जिसे चारों तरफ की सारी जागृति बरतती है, वह कैसे फँसेगा? लोगों को तो ज़रा सी हवा चले न, तो भी ये लोग सो जाते हैं।

जागृति यों ही चली जाती है। गलत हुआ, गलत हो रहा है लेकिन (खुद) कुछ अभ्यास नहीं करता। जागृति बताती ही रहती है न कि, गलत हो रहा है? तुझे जागृति बताती है कुछ?

प्रश्नकर्ता : हाँ। बताती है ऐसा सब।

दादाश्री : पूरे ही दिन? कितनी बड़ी जागृति हुई? दुनिया खोजती है लेकिन ऐसी जागृति नहीं रहती। मैंने आपको ऐसी जागृति दी है कि वह जागृति निरंतर रह सकती है। उस जागृति का उपयोग करना है। ज़रा पुरानी आदत पड़ी हुई है न! फिसलन वाली जगह पर फिसलने की आदत पड़ी हुई है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही बात है।

दादाश्री : तो वहीं पर ज़रा जागृति रखनी है कि यह फिसलन वाली जगह है। फिसल सकते हैं लेकिन क्योंकि उदय में आया है इसलिए हमें कहना है कि 'चंदूभाई तू फिसल रहा है और मैं देख रहा हूँ' इसमें कोई दिक्कत है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : लेकिन यह तो फिसल ही जाता है। वह 'खुद' भी चंदूभाई के साथ फिसल जाता है। अत: वहीं पर उपयोग रखना है। जिस प्रकार कुएँ पर बैठा हुआ आदमी अपनी वाइफ को याद करेगा, बच्चों को याद करेगा या कुएँ को याद करेगा? कुएँ पर बैठना पड़ा तो सावधान रहेगा न?

अगर समुद्र के बीच से दो फुट का रास्ता बना हुआ हो, जिसके दोनों ओर रेलिंग नहीं हो, और उस पर से गुज़रना पड़े तो उस समय वाइफ याद आएगी, लक्ष्मी याद आएगी या बंगला याद आएगा? क्या याद आएगा?

प्रश्नकर्ता : कोई भी याद नहीं आएगा।

दादाश्री : हं, वही उपयोग है। दादा ने सैद्धांतिक एकावतारी मोक्षमार्ग दिया है, तो फिर उस सिद्धांत को हमें पकड़े रखना है। उपयोग उसी में रखना चाहिए। अगर समुद्र में गिरा तो एक ही जन्म के लिए मरण होता है, जबकि यहाँ लाखों जन्मों का मरण हो जाएगा। इसलिए अंदर चंदूभाई से कहना कि 'सीधे रहो।'

निरंतर उपयोग प्राप्त करवाए एकावतारी पद

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि 'मैं निरंतर उपयोग में रहता हूँ,' तो उपयोग किस प्रकार से?

दादाश्री : नींद में भी। नींद में भी उपयोग अर्थात् अंत में तो उतना ही रहना चाहिए कि 'यह सब हो रहा है और मैं कर्ता नहीं हूँ। मैं ज्ञाता-दृष्टा हूँ।' निरंतर ऐसा ध्यान में रहे तो वह एक अवतारी कहलाता है।

जिनके आर्त व रौद्रध्यान बंद वे एकावतारी

'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह भी अवलंबन है, शब्द का अवलंबन है लेकिन वह उच्च प्रकार का अवलंबन है। वह मोक्षमार्ग का है। उसकी सुगंधी अलग होती है न! लेकिन उससे भी आगे जाना है निरालंब बनना है। कितना गज़ब का पुण्य कहलाएगा! यह बात तो सुनने को भी नहीं मिलती। यह बात शास्त्रों में नहीं मिलती।

प्रश्नकर्ता : तो एक-दो जन्मों में बन जाएगा न निरालंब?

दादाश्री : बन ही जाएगा न! यह तो अपने आप ही सब हल्का हो गया न! आर्तध्यान व रौद्रध्यान बंद हो जाने पर व्यक्ति एकावतारी बन जाता है। नियम ऐसा ही है, और अगर दो जन्म होंगे तो भी क्या नुकसान होने वाला है? अब इतने सारे जन्म तो बिगाड़े आपको खुद भी लगेगा कि हल्के फूल हो गए हैं।

आपको तो सिर्फ इतना ही देखना है कि आपको शांति रहती है या नहीं? रौद्रध्यान व आर्तध्यान होते हैं क्या? आपको वह देखते रहना है, खुद का देखते रहना है। जिसे आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं होते उसे भगवान ने 'एक अवतारी' कहा है। अगर गाढ़ होगा तो दो जन्म लेगा, एक अवतारी पद क्या कुछ कम है?

जिनके आर्तध्यान और रौद्रध्यान बंद हो जाएँगे, वे एक अवतारी हो जाएँगे।

वह परिणाम पहुँचाएगा तीर्थंकर के पास

ये जो आर्तध्यान और रौद्रध्यान बंद होगए तो वही परिणाम आपको तीर्थंकर के पास बिठाएगा। स्वभाव बदल जाने के बाद यहाँ किसके साथ रहने

देंगे? माँ-बाप कहाँ से लाएँगे? तीर्थंकर का जन्म तो राजघराने में होता है, अच्छे घराने में लेकिन मित्र तो आसपास में जो पाटिल या बनिये होते हैं, वही मित्र होते हैं न? नहीं! उससे पहले तो देवलोग यहाँ पर अवतरित हो जाते हैं। वे मनुष्य के रूप में आकर वे उनके साथ खेलते हैं। वर्ना बुरे संस्कार पड़ जाएँगे न। इसलिए सब संयोगानुसार मिल जाता है। यदि आपकी तैयारी है तो सभी संयोग तैयार हैं। आप टेढ़े तो सभी टेढ़े। आप यदि सीधे हुए तो दुषमकाल बाधक नहीं है। आपको ज्ञानीपुरुष मिले, ऐसा ज्ञान मिला। भले ही ऐसे सात दुषमकाल हो, हमें क्या हर्ज है? हम अपने ज्ञान में रहेंगे। अब आर्तध्यान व रौद्रध्यान नहीं होते। कभी भी ऐसे भाव उत्पन्न नहीं होते कि किसी का बुरा हो। अर्थात् इस धर्मध्यान के फल स्वरूप वापस एक जन्म मिलता है। यह ज्ञान मिलने के बाद किसी को दो जन्म मिलते हैं, किसी को एक मिलता है और किसी के बढ़ भी सकते हैं लेकिन यह तय है कि उसकी मुक्ति होगी क्योंकि नया कर्म बंधन रुक गया है।

जितना लोभ उतने ज़्यादा जन्म

प्रश्नकर्ता : दादा, इन आज्ञाओं का पालन करें, सत्संग करें तो फल स्वरूप अगले जन्म में ही आएगा न?

दादाश्री : हाँ, ज़रूर। वह तो सब अगले जन्म में ही मिलेगा न! पुराने अभी यह भुगत रहे हैं। अगले जन्म का हिसाब है सब, अपने यहाँ नए प्रकार का चार्ज नहीं होता, लेकिन ये आज्ञाएँ दी हैं, उतना ही चार्ज होता है। और 'तीर्थंकरों को नमस्कार करता हूँ' ऐसा बोलते हैं उससे भी चार्ज होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, इसलिए फिर अगले जन्म में प्रत्यक्ष होगा। अभी जिन परोक्ष कारणों का सेवन कर रहे हैं वे प्रत्यक्ष कब मिलेंगे?

दादाश्री : जो यहाँ पर (सत्संग के) परिचय में नहीं रहता, उसके जन्म भी बढ़ सकते हैं। 50-100-200 भी हो सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, इस सत्संग का अगले जन्म में बहुत बड़ा फल मिलेगा न?

दादाश्री : बड़ा, और कुछ नहीं, इस सत्संग का फल ही मोक्ष है। इस सत्संग के फल स्वरूप तीर्थंकरों के, पंच परमेष्ठि के, सभी के दर्शन होंगे। उनके संयोग में रह पाएँगे और मोक्ष होगा।

यह तो अक्रम विज्ञान है, एकावतारी विज्ञान है! अभी एकावतारी मोक्ष है। एक अवतार बाकी बचेगा। और आप में बहुत लोभ होगा तो तीन जन्म कर देगा। जिसे बहुत लोभ हो और वह सोचे कि यों ही चले जाएँ, इससे अच्छा तो कुछ भोगकर जाऊँगा, तो तीन जन्म कर देगा। लेकिन मोक्ष में जाएगा ही।

सावधान, ऐसा अवसर बार-बार नहीं आएगा

अब तो एक क्षण भी गँवाने जैसा नहीं है। ऐसा अवसर बार-बार नहीं आएगा, इसलिए काम निकाल लेना चाहिए। यदि यहाँ पर जागृति रखी तो सभी कर्म भस्मीभूत हो जाएँगे और एक अवतारी होकर मोक्ष में चले जाओगे। मोक्ष तो सरल है, सहज है, सुगम है।

- जय सच्चिदानंद

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

12 से 15 सितम्बर : सीडनी - ऑस्ट्रेलिया के गेरीगोंग में स्थानिय महात्माओं के लिए सत्संग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ऑस्ट्रेलिया के विविध शहरों से और यू.के., यू.एस.ए. और भारत से आए हुए लगभग तीन सौ महात्माओं ने भाग लिया। अभी तक की ऑस्ट्रेलिया की सभी शिविरों में सब से ज़्यादा हाज़िरी इस वक्त पाई गई। जी.एन.सी. के चालिस बच्चों ने पूज्यश्री का स्वागत किया। शिविर में पूज्यश्री के सिन्सियारिटी और मोरालिटी पर सत्संग सेशन के बाद आप्तपुत्र सत्संग, भक्ति-गरबा और दादा दरबार हुआ और वेरी बीच पर वॉक भी किया। अंतिम दिन कीआमा ब्लो होल में वॉक और इन्फोर्मल सत्संग हुए। उसके बाद पूज्यश्री मीनमुरा रेन फोरेस्ट वॉक भी गए थे।

16 से 18 सितम्बर : सीडनी में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के समय बैन्ड-बाजे के साथ पहले दिन पूज्यश्री का स्वागत किया गया। उसके बाद पूज्यश्री ने दादा के विज्ञान पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में टनल ओफ एन्लाइनमेन्ट, अक्रम एक्सप्रेस, गार्डन ओफ वननेस, जनरेशन गैप, 3 डी-वी आर ओक्युलस गोगल्स वगैरह आकर्षण के केन्द्र थे। जी.एन.सी. के बच्चों ने अपने हाथों का अक्रम रथ बनाकर उसी में पूज्यश्री को स्टेज तक ले गए। रोज़ लगभग 1000 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। यहाँ पर चार सौ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया जो विदेश की धरती पर यादगार अवसर था। अंतिम दिन फॉलोअप सत्संग की शुरुआत जी.एन.सी. के नब्बे बच्चों के पर्फोर्मन्स से हुई थी।

18 से 22 सितम्बर : पूज्यश्री पहली बार 'फिजी' देश में पधारे थे। पूज्यश्री का सत्संग कार्यक्रम लौटाका शहर के ऐतिहासिक 'फिजी गिरमिट सेन्टर हॉल' में रखा गया। इस कार्यक्रम में फिजी के विविध शहरों में जैसे कि लौटाका, बा, सुवा, टवुआ, नाडी वगैरह में से प्रसिद्ध बिज़नेस हाउस के मालिक अपने-अपने परिवारवालों के साथ और मुमुक्षु भी पधारे थे। ज्ञानविधि से पहले आप्तपुत्र द्वारा बा और सुवा शहर में सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें 200 मुमुक्षु उपस्थित थे। ज्ञानविधि में 200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन 22 दिनांक को वहाँ के स्थानिय शैक्षणिक संस्था के विद्यार्थिओं ने पूज्यश्री के ज्ञानविधि फॉलोअप सत्संग में भाग लिया था और उन्होंने स्टडी और लाइफ से संबंधित विविध प्रकार के प्रश्न पूछे थे। इससे पहले पूज्यश्री महात्माओं के साथ पास के ही बीचकोम्बर टापु पर भी गए।

23 से 26 सितम्बर : न्यूज़ीलेन्ड में रोटोरुआ नामक दर्शनीय शहर में पहली बार सत्संग कार्यक्रम के बजाय शिविर का आयोजन किया गया। यह शहर उसके माओरी कल्चर की जीओथर्मल प्रवृतिओं के लिए प्रख्यात है। न्यूज़ीलेन्ड के प्रसिद्ध शहरों से और विदेशों से लगभग २०० महात्मा उपस्थित थे। शिविर के समय ज्ञानविधि का भी आयोजन किया गया। उसमें ८२ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। शिविर पैकेज अनुसार सभी कार्यक्रम यहाँ पर महात्माओं के लिए रखे गए थे। स्थानिय जी.एन.सी. ग्रुप के बच्चों ने सुंदर कल्चरल प्रोग्राम प्रस्तुत किया था। वहाँ पर महात्माओं को पूज्यश्री के साथ टे पुईआ गीज़र्स देखने का मौका मिला। जो साउथ हेमीस्फीअर में बहुत बड़ा एक्टिव गीज़र्स है। यहाँ पर जीओथर्मल एक्टिविटी में होट स्प्रिंग और मड पुल का भी समावेश होता है। सेवार्थी भी पूज्यश्री की स्पेशल सेशन से चार्ज हो गए।

27 सितम्बर से 1 अक्तूबर : मलेशिया देश में पहली बार पूज्यश्री का सत्संग कार्यक्रम युनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट नाम से प्रसिद्ध ऐतिहासिक मलाका शहर में आयोजित किया गया। पिछले दो सालों से यहाँ पर आप्तपुत्र सत्संग का आयोजन होते रहता है। पूज्यश्री न्यूज़ीलेन्ड से मलेशिया बारह घंटें से ज़्यादा विमान यात्रा करके पहुँचे थे। वहाँ के स्थानिय मुमुक्षुओं ने परंपरागत ढंग से कुआलालुम्पुर एरपोर्ट पर पूज्यश्री का स्वागत किया। पहले दिन सत्संग गुजराती वणिक संघ के स्थानिय स्थल पर रखा गया। जिसमें युवाओं ने ज़ोरदार बैन्ड-बाजे के साथ और जैन शाला की 14 बालिकाओं ने 'जय दादा, जय दादा' पद पर नृत्य करके पूज्यश्री का अभिवादन किया। दूसरे दिन सुबह पूज्यश्री महात्माओं के साथ युनेस्को हेरीटेज साइट देखने गए और वहाँ पर 'फ्लोर डे ला मार मेरीटाइम' म्युज़ियम भी देखा। गार्डन में पूज्यश्री ट्राइसाइकिल में बैठे और वहाँ पर महात्माओं को पूज्यश्री के साथ बातचीत करने का अवसर भी प्राप्त हुआ और वहाँ के स्थानिय अंबाजी मंदिर के होल में मुमुक्षुओं के लिए शाम को सत्संग का आयोजन भी किया। वहाँ पर हुई ज्ञानविधि में 183 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। चौथे दिन दतारन बीच पर गए। पूज्यश्री के हल्के-फुल्के सत्संग के बाद महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ फ्रुट पार्टी का आनंद लिया। शाम को दादाई गरबा के बाद दादा दरबार का आयोजन किया। सिंगापोर के सभी महात्माओं ने संपूर्ण आयोजन में खूब सहयोग दिया।

दादावाणी

5 से 6 अक्तूबर : नवरात्री महोत्सव के दौरान दादानगर अडालज में आयोजित गरबा कार्यक्रम में दो दिन पूज्यश्री आएँ और सभी गरबा करते हुए महात्माओं को गरबा में घुमकर दर्शन दिए। सभी महात्मा माताजी की भक्ति में सराबोर हो गए थे और अंत में अंबा माताजी की आरती की गई।

7 से 11 अक्तूबर : सेफ्रोनी-महेसाणा में अपरिणित युवाओं के लिए ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन किया। उसमें 445 युवाओं ने भाग लिया। उसमें पूज्यश्री द्वारा ब्रह्मचर्य पारायण सिवाय 'कल्पना का मान' पर विशेष सत्संग का आयोजन किया। इस बार जन्मजयंति में ब्रह्मचारी भाईयों के द्वारा थीम बेस पर प्रदर्शन होनेवाला है और उसे यहाँ साधकों के सामने भी प्रदर्शित किया गया। 'समर्पण' सब्ज़ेक्ट पर सीमंधर सिटी के साधकों द्वारा सुंदर नाटक का आयोजन किया गया। पूज्यश्री के साथ में खाना, मॉर्निंग वॉक करना और व्यक्तिगत दर्शन मिलने से साधकों के मन में खूब आनंद हुआ। उनके आनंद में खूब बढ़ोतरी हुई। आप्तपुत्रों के द्वारा सत्संग, ग्रुप डिस्कशन और पर्सनल डिस्कशन भी किए गए। पूज्यश्री ने आप्तसंकुल और आप्तसिंचन के साधकों के साथ विशेष सेशन भी किया।

12 से 16 अक्तूबर : सेफ्रोनी-महेसाणा में अपरीणित बहनों के लिए भी ब्रह्मचर्य शिविर का आयोजन किया। उसमें 450 बहनों ने भाग लिया था। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण और प्रश्नोत्तरी सत्संग और 'असंतोष की भूख' सब्ज़ेक्ट पर विशेष सत्संग तथा एक्टिविटी का आयोजन किया गया। उसके अलावा डेढ़ घंटे की विशेष सामायिक, भक्ति, गरबा, दर्शन, अलग-अलग पाँच टॉपिक पर आप्तपुत्री बहनों के साथ ग्रुप डिस्कशन, आप्तकुमारी बहनों के साथ इन्फोर्मल बातचीत वगैरह सभी कार्यक्रम शिविर के दरमियान किए गए।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (पू.) पर सत्संग पारायण (शिविर)

24-31 दिसम्बर - सुबह 9-30 से 12 तथा शाम 4-30 से 7- **सत्संग**, रात 8-30 से 9-30 - **सामायिक**

1 जनवरी (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

2 जनवरी (सोम) सुबह 10 से 12 - **किर्तन भक्ति,** शाम 6 से 7-30 **पू. दादा व दादाजी के ज्ञान पर विशेष प्रदर्शन**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 4 दिसम्बर 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

वडोदरा में...

परम पूज्य दादा भगवान प्रेरित

निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दिनांक 22 फरवरी से 26 फरवरी, 2017

सत्संग : 22 फरवरी 4 से 4-30 - **स्वागत समारोह**, 22-24 फरवरी- शाम 4-30 से 7,
23 फरवरी सुबह 9-30 से 12

ज्ञानविधि : 25 फरवरी, शाम 4 से 7-30

प्राणप्रतिष्ठा : 24 फरवरी, सुबह 10 से 12 - शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
25 फरवरी, सुबह 10 से 12 - कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंत
26 फरवरी, सुबह 9-30 से 1 - श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान

24-25 फरवरी, हररोज़ सुबह प्रतिष्ठा बाद प्रक्षाल-पूजन होगा, 26 फरवरी को प्रक्षाल-पूजन शाम 4 से 7 रहेगा।

हररोज़ रात 9 से 10 - भक्ति/गरबा/कीर्तन भक्ति

स्थल : वडोदरा त्रिमंदिर, बाबरीया कोलेज के पास, वडोदरा-सुरत हाईवे, NH-8, वरणामा गाँव, **वडोदरा**.

संपर्क : 9924343335

<u>बाहर से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ</u>

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 5 फरवरी 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

राजकोट

17 दिसम्बर (शनि), शाम 7 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक** - दोषो से विमुक्त होने का उपाय - 'प्रतिक्रमण')
18 दिसम्बर (रवि), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि,**
19 दिसम्बर (सोम), शाम 7 से 10 - **सत्संग**
स्थल: बापा सीताराम चौक, मवडी गाँव, 150 फीट रींग रोड, **राजकोट** (गुजरात). **संपर्क :** 9873131971

मुंबई

6 तथा 7 जनवरी (शुक्र व शनि), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **8 जनवरी** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
9 जनवरी (सोम), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 9323528901
स्थल: बी.एम.सी ग्राउन्ड, कमला विहार स्पोर्टस क्लब के सामने, बोरसपाडा रोड, महावीर नगर, कांदीवली (वे.). **संपर्क :** 9323528901

औरंगाबाद

9 व 11 जनवरी (सोम व बुध), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **10 जनवरी** (मंगल), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
स्थल: संत एकनाथ रंग मंदिर, उस्मानपुरा, औरंगाबाद (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 8308008897

जलगाँव

12 जनवरी (गुरु), शाम 5-30 से 8 - **सत्संग** तथा **13 जनवरी** (शुक्र), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
14 जनवरी (शनि), शाम 5-30 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: बालगंधर्व खुले नाट्यगृह, बी.जे. मार्केट के सामने, जलगाँव, (महाराष्ट्र). **संपर्क :** 8806869874

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

अमरावती दि : 8 **दिसम्बर** **संपर्क :** 9422335982 **अहमदनगर** दि : 13 **दिसम्बर** **संपर्क :** 9421836256

जालना दि : 12 **दिसम्बर** **संपर्क :** 9822601695 **नासिक** दि : 14 **दिसम्बर** **संपर्क :** 9021232111

नांदेड **दिनांक :** 9 दिसम्बर **समय :** शाम 6 से 9 **संपर्क :** 8806665557
स्थल : कुसुम सभाग्रह, वी.आई.पी रोड, **नांदेड.**

औरंगाबाद **दिनांक :** 10 दिसम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : निमिषा बंगलो, पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, **औरंगाबाद.**

औरंगाबाद **दिनांक :** 11 दिसम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : यशोमंगल होल, पन्नालाल नगर, न्यु उस्मानपुरा, **औरंगाबाद.**

बुरहानपुर **दिनांक :** 16 दिसम्बर **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 7049451449
स्थल : झुलेलाल धर्मशाला, कटनी केम्प, **बुरहानपुर.**

भुसावल **दिनांक :** 16 दिसम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9921883007
स्थल : बाबा तुलसीदास बाबा कशिदास उदासी, भक्त निवास, सिन्धी कोलोनी, **भुसावल.**

चोपडा **दिनांक :** 17 दिसम्बर **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 9922473433
स्थल : सांस्कृतिक हॉल, भगिनि मंडल शाला, गो. भि. जिनिंग फैक्ट्री के सामने, चिंच चौक, **चोपडा.**

धुले **दिनांक :** 17 दिसम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9423182114
स्थल : भगवान झूलेलाल मंदिर, कुमार नगर, सकरी रोड, **धुलिया.**

पचोरा **दिनांक :** 18 दिसम्बर **समय :** सुबह 10 से 12-30 **संपर्क :** 9028163756
स्थल : साईं नौजवान सेवा मंडल, शिव-मंदिर, सिन्धी कोलोनी, **पाचोरा**

जलगाँव **दिनांक :** 18 दिसम्बर **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 8806869874
स्थल : रोटरी हॉल, गणपति नगर, आर.टी.ओ. रोड, **जलगाँव.**

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

भिलाई

22 नवम्बर (मंगल), शाम 5 से 8 - **सत्संग** (**टोपिक**-रिलेटिव धर्म-रियल धर्म)
23 नवम्बर (बुध), शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**
स्थल: पुलिस ग्राउन्ड, सेक्टर-6, **भिलाई** (छत्तीसगढ़). **संपर्क :** 8349545600
24 नवम्बर (गुरु), शाम 5 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग, स्थल** - इन्जिनीयर भवन, सिविक सेन्टर, **भिलाई.**

दिल्ली

25 नवम्बर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-नीति-प्रमाणिकता)
26 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-टालिए, भ्रांति कर्तापद की)
27 नवम्बर (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल: तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, **नई दिल्ली**. **संपर्क :** 9999533946
28 नवम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के पीछे, अग्रसेन धर्मशाला के पास, मधुबन चौक, पीतमपुरा, **दिल्ली**.
विशेष सूचना : दिल्ली सत्संग में जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने की सुविधा की आवश्यकता है, वे सीधे आवास स्थल - **बिरला मंदिर, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली** पर पहुँचे। ज्यादा जानकारी हेतु 9810098564 पर संपर्क करें।

अडालज त्रिमंदिर

3 दिसम्बर (शनि), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **4 दिसम्बर** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
4 दिसम्बर (रवि), सुबह 10 से 12 - **आप्तपुत्र सत्संग**

मोरबी

7 दिसम्बर (बुध), रात 8 से 11 - **सत्संग** (**टोपिक**-ज्ञानीनी की समझ, व्यवसाय के संबंध में)
8 दिसम्बर (गुरु), रात 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि, 9 दिसम्बर** (शुक्र), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: समय गेट के पास, सनाला रोड, **मोरबी** (गुजरात). **संपर्क :** 9978902834

जामनगर

10 दिसम्बर (शनि), शाम 6 से 9- **सत्संग** (**टोपिक**-अक्रम मार्ग से ज्ञान की प्राप्ति सरल, सुगम, सहज)
11 दिसम्बर (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि, 12 दिसम्बर** (सोम), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: प्रदर्शन ग्राउन्ड, सात रस्ता सर्कल, बस स्टेन्ड के पास, **जामनगर** (गुजरात). **संपर्क :** 9924343687

ध्रोल

11 दिसम्बर (रवि), शाम 5 से 8- **आप्तपुत्र सत्संग, 12 दिसम्बर** (सोम), शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**
13 दिसम्बर (मंगल), शाम 5 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: उमिया सोसायटी, बस स्टेन्ड के सामने, खारवा रोड, **ध्रोल** (गुजरात). **संपर्क :** 9427510933

उपलेटा

13 व 15 दिसम्बर (मंगल व गुरु), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग, 14 दिसम्बर** (बुध), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
स्थल: श्री रविन्द्रनाथ टागोर रंग भवन, रेल्वे स्टेशन के पास, **उपलेटा** (गुजरात). **संपर्क :** 9924344437

गोंडल

15 व 17 दिसम्बर (गुरु व शनि), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग, 16 दिसम्बर** (शुक्र), रात 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
स्थल: संग्रामसिंहजी हाइस्कूल मैदान, कोलेज चौक, **गोंडल** (गुजरात). **संपर्क :** 9427963767

नवम्बर 2016
वर्ष - 12 अंक - 1
अखंड क्रमांक - 133

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

संपूर्ण आज्ञापालन से एकावतारी पद की प्राप्ति

यह तो एकावतारी विज्ञान है! मेरी आज्ञा का अगर संपूर्ण पालन करेगा, तो उसका एक जन्म में कर्मों का हिसाब संपूर्ण खत्म हो जाएगा। वर्ना शायद दो या तीन जन्म हो सकते हैं, चौथा जन्म नहीं होगा। आपको तो वैसा ही करना है न? *निकाल* ला देना है कि यही धंधा करना है, जन्मोजन्म? नहीं? आपको ऐसा लगता है कि निबेड़ा आ जाएगा? यह विज्ञान है, यह धर्म नहीं है। धर्म में करना पड़ता है, जबकि यहाँ आपको और कुछ करना ही नहीं है। केवल हमारी आज्ञा का पालन करना है। आज्ञापूर्वक अर्थात् एकावतारी भाव कहलाता है। आज्ञापूर्वक यानी अहंकार के अधीन नहीं करना है। पहले खुद का अहंकार जो कहे वह करते थे, अब आज्ञा के अधीन करना है, इसलिए ज़िम्मेदारी हमारी है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.